



अग्निमय बाइबल का अनुभव करना

एक तत्काल अध्ययन पुस्तिका

Originally published in English as “Experiencing Your Fire Bible: A Quick Study Guide”

Copyright 2009 Life Publishers International

Published by Life Publishers International, Springfield, Missouri, U.S.A. All rights reserved.

समस्त विशिष्ट शीर्षक व हवाले, अन्तर्राष्ट्रीय बाइबल सोसाइटी द्वारा न्यू इंटरनेशनल वर्जन, प्रतिलिपियधिकार 1992, से उद्धृत व अनुवाद किये गये हैं।

अनुमति द्वारा

मध्य-स्तम्भ, प्रतिनिर्देश प्रणाली, प्रतिलिपियधिकार 1984, एनआईवी से, शब्दानुक्रमणिका, प्रतिलिपियधिकार 1982, 1984 द्वारा; विशिष्ट काले व सफेद चार्ट व मानचित्र, प्रतिलिपियधिकार 1988, जोन्डरवन सहकारिता की अध्ययन सामग्री से अपनाया व अनुवाद किया गया है। जोन्डरवन प्रकाशन भवन की अनुमति द्वारा इस्तेमाल किया गया।

समस्त लेख, बाइबल पठन योजना, विशिष्ट काले व श्वेत चार्ट व मानचित्र, पुस्तक परिचय, रूपरेखा, रंगीन मानचित्र व रंगीन चित्र अनुक्रमणिका, प्रसंग खोजी चिन्ह, तथा प्रसंगखोजी अनुक्रमणिका के प्रतिलिपियधिकार लाइफ पब्लिशर्स इंटरनेशनल के पास हैं। समस्त अधिकार आरक्षित हैं।



विषय सूची

भूमिका	4
परिचय	7
अनुभागीय शीर्षक	16
प्रति निर्देश प्रणाली	19
कुँजी आयतों की व्याख्या	24
मुख्य विषयों पर लेख	27
12 विशेष विषयों के लिए प्रसंग खोजी	29
प्रसंग खोजी-अनुक्रमणिका	32
मानचित्र व चार्ट	34
शब्दानुक्रमणिका तथा अन्य औजार	41
उत्तरमाला	45

स्वागत

क्या आप पवित्र आत्मा और यीशु मसीह के साथ एक गहरा सम्बन्ध स्थापित करना चाहते हैं ?

अग्निमय बाइबल का निर्माण, मसीह केन्द्रित तथा आत्मा से परिपूर्ण जीवन जीने में आपकी सहायता हेतु किया गया है। जब आप इन विस्तृत व्याख्या करने वाली अध्ययन सामग्री को पढ़ते हैं तो आप परमेश्वर में बढ़ेंगे तथा अपने जीवन व उसकी कलीसिया के प्रति उसकी योजनाओं को समझ पाएंगे।

क्या आप बाइबल की सच्चाईयों को अधिक उत्तम ढंग से समझना चाहते हैं ?

जितने भी मसीही जन परमेश्वर के वचनों की गहन जानकारी, समझ को प्राप्त करना चाहते हैं उन सबके लिए अग्निमय बाइबल एक महत्वपूर्ण औजार है। यह अध्ययन व बाइबल आपकी आत्मिक समझ में एक मज़बूत बुनियाद डालने में सहायता करेगी। आप पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा, आत्मिक विषय में जीना तथा आम जिन्दगी की चुनौतियों का सामना करना सीखेंगे।

अब आपके पास अग्निमय बाइबल है, आप कैसे इसका अधिकांश लाभ उठा पाएंगे ?

जो अद्भुत अध्ययनकारी औजार आपके लिए मुहैया कराये गये हैं आप उसके साथ क्या कर सकते हैं ? यह औजार आपकी विभिन्न प्रकार की बाइबल शिक्षाओं, संदेशों, आपके या दूसरों को शिक्षा देने के लिए सामग्री प्राप्त करने में सहायता करेगा। आप लोगों तथा स्थानों से सम्बन्धित ऐसे तथ्यों को पाएंगे जो आपने पहले कभी नहीं देखे थे। आप बाइबल को कुछ उस तरह समझ पाएंगे जो शायद आपने अपने सपनों में भी न सोचा हो। आप बाइबल के प्रत्येक खास विषय पर एक विशेष जोर को पाएंगे, जैसे- ईश्वरीय चंगाई, चमत्कार, आत्मा के वरदान, आत्मा की परिपूर्णता में जीवन व्यतीत करना।

आपकी अग्निमय बाइबल इस्तेमाल करने के कुछ तरीके निम्नलिखित हैं:

- क्या आप बाइबल की किसी खास पुस्तक पर **संदेश तैयार** करना चाहते हैं ? परिचय, अनुभागीय शीर्षक, तथा आयतें जो प्रत्येक पुस्तक में दी हैं आपकी सम्पूर्ण पुस्तक तथा विशेष पद को समझने में सहायता करेगी, जैसे जैसे आप पुस्तक सम्बन्धित विशेष जानकारियों तथा व्याख्याओं को इकट्ठा करते हैं।
- यदि आप **पारिवारिक मनन** के लिए प्रेरणा से भरा संदेश तैयार करना चाहते हैं तो आप विषय का चुनाव करने के पश्चात विषय सूची तथा प्रसंग खोजी के साथ दिये गये अध्ययन लेख तथा उस विषय पर दिये लेख द्वारा विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

अग्रिमय बाइबल में बारह ऐसे औजार शामिल हैं जो विशेषकर इसलिए तैयार किये गये हैं ताकि आपको अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त हो तथा आपको परमेश्वर का वचन प्रभावशाली ढंग से पढ़ने में सहायता मिल सके।

- बाइबल की प्रत्येक पुस्तक का परिचय
- अनुभागीय शीर्षक
- प्रति निर्देश प्रणाली
- मुख्य शीर्षकों पर लेख
- कुँजी आयतों की व्याख्या
- विषय सूची
- 12 विशेष विषयों के लिए प्रसंग खोजी
- प्रसंग खोजी सूची
- चार्ट व मानचित्र
- भार और तौल की तालिका
- शब्दानुक्रमणिका

इस पुस्तक के अन्दर, हम इन सारे औजारों पर विस्तृत विवरण इस तरह से करेंगे कि आपको इसका अधिक से अधिक लाभ पहुँच सके। हम इन औजारों पर संक्षेप में विवरण करेंगे तथा बतायेंगे कि किस तरह प्रत्येक औजार का इस्तेमाल किया जाये।

1

परिचय

आपको यह समझने के लिए कि एक बाइबल का लेखक बाइबल की किसी भी पुस्तक के अनुच्छेदों में क्या कह रहा है, आपको सर्वप्रथम पुस्तक का परिचय पढ़ना चाहिए। प्रत्येक प्रस्तावना या परिचय में निम्नलिखित बातें शामिल हैं:

1. रूपरेखा
2. ऐतिहासिक जानकारी की पृष्ठभूमि
3. पुस्तक का उद्देश्य
4. विषय सूची का सर्वेक्षण
5. विशेष गुण
6. नये नियम की परिपूर्णता

परिचय में यह छः बातें बाइबल की किसी भी पुस्तक का अन्तःज्ञान व जानकारीयों प्रदान करती है। आप निम्नलिखित प्रश्नों को पूछने के द्वारा छः बातों का अभ्यास कर सकते हैं। यह प्रश्न बाइबल की प्रथम पुस्तक उत्पत्ति से प्राप्त जानकारी पर आधारित हैं।



ढूँढें >> अपनी बाइबल के प्रथम पृष्ठ को खोलें, जो उत्पत्ति का परिचय है।

रूपरेखा

ध्यान दें कि किस तरह रूपरेखा हमें दो प्रकार से सहायक जानकारियाँ प्रदान करती है। प्रथम, यह प्रत्येक दीर्घ खण्ड को एक शीर्षक व उपशीर्षकों द्वारा व्यवस्थित करती है। दूसरा, रूपरेखा सारे शीर्षकों को इस ढंग से व्यवस्थित करती है कि वह एक पुस्तक का रूप धारण कर लेती है। अतः रूपरेखा पूरी पुस्तक का संक्षेप सारांश प्रस्तुत करती है और साथ ही साथ संकेत भी देती है कि किसी बात को पुस्तक में कहाँ खोजें। निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उत्पत्ति की रूपरेखा का प्रयोग करें:

उत्पत्ति

रूपरेखा

- I. मानव इतिहास का प्रारंभ (1:1-11:26)
 - A. विश्व व जीवन का प्रारंभ (1:1-2:25)
 1. समस्त सृष्टि का वर्णन (1:1-2:4)
 2. आदम व हव्वा का विमूढ सृष्टि-वर्णन (2:5-25)
 - B. पाप का प्रारंभ (3:1-24)
 1. परीक्षा व पाप में गिरना (3:1-6)
 2. पाप में गिरने का परिणाम (3:7-24)
 - C. सभ्यता का प्रारंभ (4:1-5:32)
 1. फैन : विधर्मी संस्कृति (4:1-24)
 2. शैत : एक धार्मिक अवरोध (4:25-26)
 3. बाइ-पूर्व पैतृकों का वंशगत इतिहास (5:1-32)
 - D. जलप्रलय : धैतिक सभ्यता के लिये परमेश्वर का न्याय (6:1-8:19)
 1. सार्वभौमिक षष्ठावार (6:1-8:11-12)

प्र 1 रूपरेखा में प्रथम मुख्य शीर्षक क्या दिया गया है ?

प्र 2 इस शीर्षक के भीतर उत्पत्ति के किन अध्यायों को शामिल किया गया है ?

प्र 3 रूपरेखा में अन्तिम उपशीर्षक क्या दिया गया है ?

प्र 4 इस अन्तिम उपशीर्षक में अध्याय 50 की कौन सी आयत को शामिल किया गया है ?

ऐतिहासिक जानकारी

बाइबल में लिखित किसी भी पुस्तक की विषय वस्तु के सही अर्थ को बताने के लिए हमें पुस्तक तथा लेखक की ऐतिहासिक जानकारी होना अति आवश्यक है। यह जानकारियाँ प्रत्येक पुस्तक के परिचय में शामिल की गयी हैं। परिचय में लेखक की पृष्ठभूमि, किस परिस्थिति में वह पुस्तक लिखी गयी तथा दिनांक बतायी गयी है।



ढूँढ़ें >> उत्पत्ति की ऐतिहासिक जानकारी को परिचय से प्राप्त कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:

लेखन तिथि : लगभग 1445-1405 ई.पू.

पृष्ठभूमि

उत्पत्ति लेखक रोमी से जुड़े विषय के प्रथम पुस्तक के लेखक या लेखिका है। यह सम्पूर्ण बाइबल के सभी पुस्तकों के बीच में प्रथम है। इसकी में इस पुस्तक का शैलीगत पुस्तक के प्रथम शब्द 'बेरीय' ('अर्थ में') से शुरू होता है। उत्पत्ति शब्द जो इसके परिचय में प्रयोग किया गया है वह इसी शब्द का यूनानी शब्द है जिसका अर्थ 'अर्थ स्पष्ट, किसी की दृष्टि का इलाका'। उत्पत्ति 'अर्थों की पुस्तक' है।

उत्पत्ति की लेखक के विषय में किसी भी स्पष्ट या यही मान्यता नहीं है। फिर भी रोम बाइबल की कब्रों में कि बाइबल की प्रथम तीन पुस्तकों को मुसा ने लिखा है (पुराने नियम के तीन पुस्तक) इसलिए उत्पत्ति को भी (उपलब्ध 1:1 2:3; 2:1 14:5; एजा 6:18; यो 13:1; यो 9:11-13; यसा 4:4; यर 12:28; लुका 16:20-31; एजा 7:19-23; 9:28-22; 1कु 6:9; 2कु 3:15)। यसा ही, पुराने नियम के पहले लेखक तथा शैलीगत अन्वेषण विद्वत् एक तब से यह मानते हैं कि मुसा इसका लेखक/ संश्लेषक रहा है। जब उत्पत्ति के इतिहास को देखते हैं तो मुसा का जीवन काल से जो वर्णन है: मुसा की पृथिवी उत्पत्ति के लिखने में, एजा 4:4 का उल्लेख है, यसा 4:4 लिखित, व कर्मचारी लेखक को उल्लेख से मुसा की पुराने लेखक के विषय कदा का रहा था, उसे उत्पत्ति में संकलित किया तथा संश्लेषक किया था। उत्पत्ति को लिखने वाले मुसा के द्वारा इसका ऐतिहासिक लेखक शब्द इस शैली से लिखा है जो 1:1 का है। यसा 4:4 का उल्लेख है "यह वर्णन है" (इसकी में एजा 4:4 लिखित)। यसा 4:4 इस प्रकार से भी संश्लेषक कर सकते हैं, "मे इतिहास के द्वारा" (यिजे 2:4; 5:1; 6:9; 10:1; 11-10:27; 25:12; 19: 26-1:9; 37:2)।

उत्पत्ति में दृष्टि का अर्थ किमुल बड़े शैली से किया गया है, मुसा का इलाक तथा इसे रोमी की उत्पत्ति व अब्राहम और अन्य पैतृकों के द्वारा यागोला की कथा का शैलीगत शब्द आता है। इसकी ऐतिहासिक वास्तव, यह विषय में प्रथम पैतृक शैली के द्वारा शैलीगत लेखक के रूप में उल्लेख किया है (एजा 19:4-6; 24:37-39; लुका 11:31; 17:26-32; यो 7:21-23; 8:58-59); यो 7:21 के द्वारा 1:1; 1कु 15:21-22; 45-47; 2कु 11:3; यसा 3:8; 4:22-24; 28; 1यि 2:13-14; 28 11:4-22; 2यसा 3:4-6; यो 7:11)। इसकी ऐतिहासिकता पुराने लेखक के द्वारा भी स्पष्ट दर्शाता है जो 1:1 है। मुसा आगोला का लिखित/क (1:1 7:22) तथा इसी लेखक की वास्तविकता के द्वारा अन्वेषण प्रथम पुस्तक की लिखा है।

प्र 5 उत्पत्ति का लेखक कौन है ?

प्र 6 इस पुस्तक का विषय क्या है ?

प्र 7 इसके लिखने की तिथि क्या है ?

प्र 8 पृष्ठभूमि की जानकारी को पढ़ें। पुस्तक के नाम 'उत्पत्ति' का क्या अर्थ है ?



पुराने नियम की पुस्तकें

पुराने नियम में 39 पुस्तकें हैं। ये पुस्तकें परमेश्वर और यहूदियों के बीच 1500 वर्षों के दौरान हुई (1900 से 400 ईसा.पूर्व) सहमती की कहानी को बयान करती हैं। जिन्हें 5 विभिन्न भागों के में बाँटा जा सकता है।

1. **व्यवस्था की पुस्तकें (पेन्टाटुक):** उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यवस्था, गिनती, व्यवस्था विवरण
2. **इतिहास की पुस्तकें:** यहोशू, न्यायियों, रुत, 1 व 2 शमूएल, 1 व 2 राजा, 1 व 2 इतिहास एज़्रा, नहेम्याह, एस्तेर
3. **कविताएं:** अय्यूब, भजन संहिता, नीतिवचन, सभोपदेशक, श्रेष्ठगीत
4. **बड़े भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें:** यशायाह, यिर्मयाह, विलाप गीत, यहेजकेल दानिय्येल
5. **छोटे भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें:** होशे, योएल, आमोस, ओवद्याह योना मीका नहूम, हबकूल, सपन्याह, हागै, जर्कयाह, मलाकी

प्रत्येक पुस्तक का नाम और बाइबल में वह कहाँ है, उसे विषय सूची पर अंकित किया गया है। प्रत्येक पुस्तक के लिए संक्षिप्त विवरण, जिसे आपकी अध्ययन बाइबल में अध्ययन सामग्री के तौर पर इस्तेमाल किया गया है, संक्षिप्त विवरण की सूची में दिया गया है (विषय सूची के 3 पेज पश्चात अंकित है)

उद्देश्य

पुस्तक के बुनियादी उद्देश्य से सम्बन्धित एक वाक्य, विशेष प्रकार की समझ को प्रदान करता है कि आखिर वह पुस्तक क्यों लिखी गयी थी। यह आपको ये भी समझने में सहायता करेगी कि यह पुस्तक बाइबल की अन्य पुस्तकों से कैसे मेल खाती हैं। उत्पत्ति के उद्देश्य को लेकर लिखित खण्ड को पढ़ें।

उद्देश्य

धर्मशास्त्र के प्रथम पाँच पुस्तकों के लिये तथा बाद में बाइबल के प्रकाशन के लिये, उत्पत्ति की पुस्तक एक आवश्यक नींव प्रदान करती है। इस पुस्तक में विश्व, मानव, विश्व, पाप, स्वर्ग, भाषण, पशु, इत्यादि तथा झूटकारा देने वाले इतिहास के प्रारंभ के विश्वव्यापी लेखकों को संतोषित कर रखा गया है। यह परमेश्वर के उद्देश्य के अनुसार लिखा गया है जिससे पुराने व नये नियम, दोनों काव्यों के द्वारा अपने अर्थ को, सृष्टि, मानव जाति, पाप में गिरने, मृत्यु, न्याय, नई वातावरण तथा झूटकारे की इतिहास को अन्तर्गत के संतान के द्वारा समझाया गया है।

प्र 9 उत्पत्ति की पुस्तक किन नौ बातों का भरोसेमन्द अभिलेख प्रदान करती है ?

सर्वेक्षण

सर्वेक्षण प्रत्येक पुस्तक के ज्यादातर खण्डों का सारांश प्रस्तुत करता है। इस प्रकार की जानकारियाँ एक बड़ी पुस्तक को चुने हुए विषय या शीर्षकों के आधार पर अध्यायों व छोटे-छोटे खण्डों में बाँट देते हैं। आप इस सर्वेक्षण को विशेषकर तब कारगर पायेंगे जब आप व्यक्तिगत रूप में सम्पूर्ण पुस्तक का अध्ययन कर रहे हो, या शिक्षा हेतु संदेशों की श्रृंखला को या अध्यायों को तैयार कर रहे हों।



ढूँढ़ें >> उत्पत्ति के सर्वेक्षण को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

सर्वेक्षण

उत्पत्ति स्वाभाविक रीति से दो भागों में विभक्त है। (A) 1-11 अध्यायों में मानव की उत्पत्ति, अल्प से अग्रिम तक के विषय वर्णन तथा पाँच प्रमुख घटनाओं पर उल्लेख प्रस्तुत किया है। (1) सृष्टि : परमेश्वर ने सम्पूर्ण वस्तुओं की सृष्टि की, आदम व हव्वा को भी, जिसे उसने अल्प की बहिष्कार में रखा (अध्याय 1-2)। (2) पाप में पिरा : अज्ञान व पापों के द्वारा आदम व हव्वा ने पाप व मृत्यु के अर्थ को प्रथम इतिहास में प्रवेश दिलवाया (अध्याय 3)। (3) कैन व हव्वा : इस घटक ने इतिहास के दो प्रमुख भागों को बतलाया : सम्बन्धित सम्बन्ध तथा एक दुष्टकारा घटक सम्बन्ध (अध्याय 4-5)। (4) जलजलप : पुण्ड्रि कैल का विश्व इतना बुरा हो गया था कि परमेश्वर को एक सर्वभौमिक बाढ़ के द्वारा लोगों को नष्ट करना पड़ा और धर्म नष्ट तथा दुष्टका परिणत बचाया गया (अध्याय 6-10)। (5) कैबलिन का युद्ध : जब बाढ़ के परिणत भी नष्ट नहीं हुए के लिये युद्ध तथा परमेश्वर के विरुद्ध बाधा के लिये तब परमेश्वर ने भाषा व संस्कृति में बड़ा बड़ा बदलाव नष्ट कर दिया जो सम्पूर्ण दुष्टी पर विद्यमान था (अध्याय 11)।

प्र 10 उत्पत्ति को कितने भागों में बाँटा गया है ?

प्र 11 प्रथम भाग, जो मानव जाति की शुरुआत आदम से अब्राहम तक के विवरण को प्रस्तुत करता है, काल सम्बन्धित कितनी घटनाओं पर जोर देता है ?

प्र 12 उनमें से एक घटना का संक्षिप्त विवरण करें ?

प्र 13 पुस्तक के दूसरे भाग में अंकित चार महान पुरुषों के नाम बताओ।

मुख्य विशेषताएं

बाइबल की प्रत्येक पुस्तक अनोखी है। मुख्य विशेषताओं का अनुच्छेद पुस्तक की कुछ विशेष बातों को प्रगट करता है। इनका सम्बन्ध लेखक, उस पुस्तक के प्रमुख चरित्र, पुस्तक की विषय वस्तु से, या पुस्तक के लिखे गये ऐतिहासिक काल या समय से हो सकता है।



ढूँढ़ें >> उत्पत्ति को लेकर मुख्य विशेषताओं के अनुच्छेद को खोजें।

विशेषताएं

उत्पत्ति में सत्रस प्रमुख बातें पाई जाती हैं। (1) (साम्प्रतः अन्वय की पुस्तक को खोजकर) यह बाइबल की पहली लिखित पुस्तक थी, और इसमें, मनुष्य के इतिहास का प्रारंभ था, इसी लीन यह सुटबरे का प्रारंभ का जन्म है। (2) उत्पत्ति का इतिहास एक सम्बन्धित एक फैला हुआ है जो बाइबल के सम्प्रत काल को जोड़े भी तो खंडी होती, इसका प्रारंभ प्रथम मन्व्य जोड़े के साथ होता, विश्वीय बाढ़ के पूर्व के इतिहास तक पहुँची होती है, सभी इसी इतिहास लिखा हुआ है जो रोष बने हुए सम्पूर्ण पुनर्निर्माण में लिखा गया हुआ है। (3) उत्पत्ति इस बात को प्रदर्शित कराती है कि यह पुनः संसार में पुनर्जीवित या का जीवन मनुष्य रीति के परमेश्वर का कार्य है न कि प्रकृति अपने आप से उत्पन्न हुई है। अध्याय 1 व 2 में परमेश्वर का, विश्व के कार्य के रूप में परमेश्वर का काम आया है यह वास्तविक रूप कि उसी में सृष्टि की है। (4) उत्पत्ति प्रकृति की पुस्तक है - प्रथम विश्व, प्रथम परिवार, प्रथम जन्म, प्रथम मरण, प्रथम राज्य, प्रथम बहुविधता, प्रथम संघर्ष संभव, उदार के लिये प्रथम प्रतिज्ञा और इसी रीति से और अन्य कई बातें। (5) अन्वय के सत्रस परमेश्वर की वाच जो उसकी कुराइट के साथ प्रारंभ हुई। (12:1-3), जिसे अध्याय 15 में निर्दिष्ट किया गया अध्याय

प्र 14 उत्पत्ति कितनी विशेषताओं का उल्लेख करती है ?

प्र 15 इनमें से दो विशेषताओं को लिखें।

नये नियम में परिपूर्णता

परिचय में प्राप्त, नये नियम में परिपूर्णता का अनुच्छेद, इस बात का विवरण करता है कि किस तरह घटनाएं, शिक्षाएं, तथा पुराने नियम में बतायी गयी भविष्यवाणियाँ नये नियम में पूरी हुईं। अनेकों पहलुओं से देखा जाये तो, पुराने नियम की पुस्तकें नये नियम की पुस्तकों के लिए मंच तैयार करती हैं। पुराने नियम में ऐसे ऐसे ऐतिहासिक घटनाक्रम हैं जो सीधे तौर पर नये नियम से आकर जुड़ते हैं। बहुत बार नये नियम की शिक्षाओं व घटनाओं को सही मायनों में समझे बगैर पुराने नियम की घटनाओं को समझना काफी मुश्किल हो जाता है।



ढूँँ >> निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देने में आपकी सहायता करने के लिए उत्पत्ति के परिचय में लिखित नये नियम में परीपूर्णता के अनुच्छेद का इस्तेमाल करें।

नये नियम में परिपूर्णता

उत्पत्ति, सुटर्स के धारी इतिहास को प्रस्तुत करती है और एक सुटने वाला अर रूढ़ है जो की की संतान (3:15) द्वारा, यह रोग का वंशज होना (4:25-26), यह रोग का वंशज होना (9:26-27) और यह अन्तर्गत के वंश से होना (12:3)। नये नियम 12:3 को सीधे ही प्रभु शैतु मसीह के द्वारा उद्धार का उपाय जिसे परमेश्वर ने दिया है, को समझाया है (पता 3:16,29)। बहुरंगी व्यक्ति, तथा पत्नर, जो उत्पत्ति में है नये नियम में सुटर्स व धार्मिकता के लिये (जैसे रो 4; इब्र 11:1-22), परमेश्वर का न्याय (जैसे लूक 17:26-29,32; 2पता 3:6; यहूद 7,11a) तथा मसीह का ज्वलितत्व (पता 1:1; यहूद 8:58; इब्र 7) के लिये प्रयुक्त हुए हैं।

प्र 16 उत्पत्ति एक उद्धारकर्ता की तरफ संकेत करती है जो चार वशों से होकर आती हैं। वे क्या हैं? _____

प्र 17 'विश्वास व धार्मिकता के सम्बन्ध में' नये नियम में उत्पत्ति से अनेकों घटनाओं व लोगों का जिक्र किया गया है। इब्रानियों 11:1-22 में लिखित तीन या चार लोगों के नाम लिखें। _____



नये नियम की पुस्तकें

नये नियम में कुल 27 पुस्तकें हैं। यह पुस्तकें हमें यीशु मसीह के जीवन व मृत्यु के बारे में बताती हैं जिसने पुराने नियम में प्रारम्भ हुए हमारे प्रायश्चित के कार्य को समाप्त किया। यह पुस्तकें मसीही कलीसियाओं के जन्म व बढ़ौत्तरी की भी जानकारी देती हैं। हम नये नियम की इन पुस्तकों को चार विभिन्न भागों में बाँट सकते हैं।

1. **ऐतिहासिक पुस्तकें:** मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना, प्रेरितों के काम
2. **पौलुस की पत्रियाँ:** रोमियों, 1 व 2 कुरिन्थियों, गलातियों, इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों, 1 व 2 थिस्सलुनीकियों, 1 व 2 तीमुथियुस, तीतुस फिलेमोन
3. **सब के लिए पत्रियाँ:** इब्रानियों, याकूब, 1 व 2 पतरस, 1, 2, 3 यूहन्ना, यहूदा
4. **खुलासा:** प्रकाशित वाक्य

प्रत्येक पुस्तक का नाम तथा बाइबल में वह कहाँ पर लिखी है, इसका विवरण विषय सूची में दर्शाया गया है। प्रत्येक पुस्तक के लिए संक्षिप्त विवरण जिसे आपकी अध्ययन बाइबल में अध्ययन सामग्री के तौर पर इस्तेमाल किया गया है संक्षिप्त विवरण की सूची में दिया गया है (विषय सूची के 3 पेज बाद अंकित है)।

2

अनुभागी शीर्षक

आपकी बाइबल में अनेकों अनुभागीय शीर्षक उपलब्ध हैं जो आपको विषय तथा प्रत्येक खण्ड का अर्थ समझने में सहायता करेंगे। यह शीर्षक छोटे वाक्यों के रूप में हैं जो बहुत सी आयतों के एक खण्ड के विषय को जाहिर करते हैं। अधिकांश आप शीर्षकों को अध्याय के प्रारम्भ में पायेंगे और कभी कभी आप इन्हें अध्याय के बीच में भी देख सकते हैं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि कहाँ नया खण्ड या शीर्षक प्रारम्भ होता है।



ढूँढ़ें >> ध्यान दें कि पेज 5 व 9 में कहाँ पहले दो शीर्षक दर्शाये गये हैं।

उत्पत्ति 1	4	GENESIS 1
<p>आरम्भ</p> <p>1 अदि ने परमेश्वर ने अकाला और पृथ्वी की सृष्टि की।</p> <p>2 पृथ्वी बेजल और सुशून्य पड़ी थी, और तबे तला के ऊपर अंधियारा था; तब परमेश्वर का अकाला अल के ऊपर सफरदार था।</p> <p>3 तब परमेश्वर ने कहा, "उजियारा हो," की उजियारा हो गया।</p> <p>4 और परमेश्वर ने उजियारा को देख कि अच्छा है, और परमेश्वर ने उजियारा को अन्धियारे से अलग किया।</p> <p>5 और परमेश्वर ने उजियारा को दिन और अंधियारा को रात कहा। तब तबे तबे फिर फिर हुआ। इस प्रकार पहले दिन हो गया।</p> <p>6 फिर परमेश्वर ने कहा, "अल के बीच एक ऐसा अन्तर हो कि</p>	<p>1:1-5:148:2;</p> <p>2:1-3:22; 4:1-4:21;</p> <p>4:1-4:26; 5:1-5:1;</p> <p>2:9-21,27; 3:1-2:3;</p> <p>4:1-4; 5:1-5:1;</p> <p>4:1-5:1; 5:1-5:1;</p> <p>4:1-5:1; 5:1-5:1;</p> <p>1:1-1:1; 2:1-2:1; 3:1-3:1;</p> <p>4:1-4:1; 5:1-5:1;</p> <p>5:1-5:1; 6:1-6:1;</p> <p>7:1-7:1; 8:1-8:1;</p> <p>9:1-9:1; 10:1-10:1;</p> <p>11:1-11:1; 12:1-12:1;</p> <p>13:1-13:1; 14:1-14:1;</p> <p>15:1-15:1; 16:1-16:1;</p> <p>17:1-17:1; 18:1-18:1;</p> <p>19:1-19:1; 20:1-20:1;</p> <p>21:1-21:1; 22:1-22:1;</p> <p>23:1-23:1; 24:1-24:1;</p> <p>25:1-25:1; 26:1-26:1;</p> <p>27:1-27:1; 28:1-28:1;</p> <p>29:1-29:1; 30:1-30:1;</p> <p>31:1-31:1; 32:1-32:1;</p> <p>33:1-33:1; 34:1-34:1;</p> <p>35:1-35:1; 36:1-36:1;</p> <p>37:1-37:1; 38:1-38:1;</p> <p>39:1-39:1; 40:1-40:1;</p> <p>41:1-41:1; 42:1-42:1;</p> <p>43:1-43:1; 44:1-44:1;</p> <p>45:1-45:1; 46:1-46:1;</p> <p>47:1-47:1; 48:1-48:1;</p> <p>49:1-49:1; 50:1-50:1;</p> <p>51:1-51:1; 52:1-52:1;</p> <p>53:1-53:1; 54:1-54:1;</p> <p>55:1-55:1; 56:1-56:1;</p> <p>57:1-57:1; 58:1-58:1;</p> <p>59:1-59:1; 60:1-60:1;</p> <p>61:1-61:1; 62:1-62:1;</p> <p>63:1-63:1; 64:1-64:1;</p> <p>65:1-65:1; 66:1-66:1;</p> <p>67:1-67:1; 68:1-68:1;</p> <p>69:1-69:1; 70:1-70:1;</p> <p>71:1-71:1; 72:1-72:1;</p> <p>73:1-73:1; 74:1-74:1;</p> <p>75:1-75:1; 76:1-76:1;</p> <p>77:1-77:1; 78:1-78:1;</p> <p>79:1-79:1; 80:1-80:1;</p> <p>81:1-81:1; 82:1-82:1;</p> <p>83:1-83:1; 84:1-84:1;</p> <p>85:1-85:1; 86:1-86:1;</p> <p>87:1-87:1; 88:1-88:1;</p> <p>89:1-89:1; 90:1-90:1;</p> <p>91:1-91:1; 92:1-92:1;</p> <p>93:1-93:1; 94:1-94:1;</p> <p>95:1-95:1; 96:1-96:1;</p> <p>97:1-97:1; 98:1-98:1;</p> <p>99:1-99:1; 100:1-100:1;</p>	<p>अकाला के अन्तर में उजियार्य हो; और वे पिको, और गिनत समने और जिले और वर्षों के बराबर हो;</p> <p>15 और वे ज्येठियाँ अकाला के अन्तर में पृथ्वी पर उकाला देवताओं भी उठीं," और पैसा ही हो गया।</p> <p>16 तब परमेश्वर ने दो बड़ी ज्येठियाँ बनाईं; उन में से बड़ी ज्येठि को दिन पर प्रमुख करने के लिये और छोटी ज्येठि को रात पर प्रमुख करने के लिये बनाया; और ताराण को भी बनाया।</p> <p>17 परमेश्वर ने उनको अकाला के अन्तर में इतलिये रखा कि वे पृथ्वी पर उकाला दें,</p> <p>18 तब दिन और रात पर प्रमुख करें, और उजियारा को अन्धियारे</p>

प्र 1 उत्पत्ति के लिए सर्वप्रथम अनुभागीय शीर्षक क्या है ?

प्र 2 वह कहाँ लिखा है ?

प्र 3 उत्पत्ति के लिए दूसरा अनुभागीय शीर्षक क्या है ?

प्र 4 वह कहाँ लिखा है ?

पहला शीर्षक उत्पत्ति 1:1 से 2:3 के बीच के विषय को प्रस्तुत करता है। दूसरा शीर्षक उत्पत्ति 2:4 से 25 के बीच के विषय को प्रस्तुत करता है जब आप इस प्रकार के शीर्षक को पढ़ते हैं, ध्यान दें, प्रत्येक शीर्षक के अन्दर कितने अनुच्छेद या आयतें लिखी हैं। जैसे-जैसे आप अनुच्छेदों व आयतों को एक शीर्षक के अन्तर्गत पढ़ते हैं तो, समझने का प्रयास करें कि यह आयतें किस प्रकार से विषय के शीर्षक के साथ जुड़ती हैं।



आयत व आयतें

बाइबल, अनेकों पुस्तकों के समान अनेकों अध्यायों में विभाजित है। निम्नलिखित दर्शाये गये नम्बर 1 पर ध्यान दें। यह अंक दर्शाता है कि यह उत्पत्ति की पुस्तक का 1 अध्याय है।

प्रत्येक अध्याय अनेकों आयतों में बँटा हुआ है तथा आयतों के सामने संख्या लिखी गयी है। एक आयत में ज्यादातर एक वाक्य दिया गया है परन्तु सम्भवतः उसमें एक से अधिक वाक्य भी हो सकते हैं।

निम्नलिखित चित्र में 'पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी' से पहले उभरती हुई संख्या 2 पर ध्यान दें। यह छोटा उभरता हुआ अंक, उत्पत्ति की पुस्तक के प्रथम अध्याय की 2 आयत को दर्शाता है। और हम इसे इस तरह लिखेंगे: उत्पत्ति 1:2

आरम्भ

- 1 अदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को सृष्टि की।
- 2 पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी, और तब जल के ऊपर अन्धकार था, जब परमेश्वर का अलग जल के ऊपर आकाश था।
- 3 जब परमेश्वर ने कहा, "अँधकार हो," तो अँधकार ही रहा।
- 4 और परमेश्वर ने अँधकार को रोशनी अन्ध है, और परमेश्वर ने अँधकार को अन्धकार से अलग किया।
- 5 और परमेश्वर ने अँधकार को दिन और अन्धकार को रात कहा।
- 6 तब रोशनी हुई फिर और हुआ। इस प्रकार चला दिन ही रहा।
- 7 तब परमेश्वर ने कहा, "जल के बीच एक रेखा खींचो जो कि जल दो भाग हो जाए।"

प्रारम्भ में जब बाइबल लिखी गयी, तब उसको अध्यायों व आयतों में नहीं बाँटा गया था। ये संख्याओं द्वारा विभाजन का कार्य उसके वर्षों बाद हुआ। यह हमारी बाइबल के किसी विशेष स्थान के बारे में खोजने में सहायता करता है। यह विभाजन बाइबल की प्रत्येक आयत के पते के जैसे कार्य करता है। इन 'पतों' को आयत या हवाला कहा जाता है।

3

प्रति निर्देश प्रणाली

अग्रिमय बाइबल हवालों की एक ऐसी प्रतिनिर्देश प्रणाली प्रस्तुत करती है जिसके द्वारा आप बाइबल के एक भाग को दूसरे समानार्थी भाग से आपस में जोड़ सकें। क्योंकि बाइबल के अन्दर 31,102 आयतें पायी जाती हैं इसलिए इस प्रकार की प्रणाली के द्वारा पूरी बाइबल में जिन वचनों, अनुच्छेदों, अध्यायों, या विषयों का आप अध्ययन करना चाहते हैं उन्हें ढूँढ़ना आसान हो जाता है। इस प्रणाली के तीन भाग हैं:

- संगत उल्लेख
- समानार्थ अनुच्छेद
- समान उल्लेख

संगत उल्लेख

एक 'संगत उल्लेख' किसी एक आयत का ऐसा उल्लेख है जो दूसरी आयत या अनेकों आयतों के समान अर्थ रखता है। यह व्याख्यान करने वाली व गहन शृंखला, जो संगत हवालों या वचनों को शामिल करने वाले उल्लेख, आपकी बाइबल में अलग कॉलम या स्तम्भ में पाये जाते हैं, साधारणतः ये कॉलम पेज के मध्यम में होते हैं। इस कॉलम में गहरे काले रंग से लिखित वचन संख्या दर्शाती है कि किस वचन के समान अतिरिक्त वचन अंकित किये गये हैं। (बहुत सी बाइबलों में वचन संख्या को और अधिक प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने के लिए तिरछे अर्थात् इटैलिक शब्दों का इस्तेमाल किया जाता है) उत्पत्ति की पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर अंकित मध्य कॉलम के दृष्टान्त पर ध्यान दें। पहली चीज़ 1:1 को गहरे अंकों में छापा गया है। जो उत्पत्ति 1:1 की ओर संकेत करता है।

ध्यान दें कि किस तरह से उत्पत्ति 1:1 के साथ पहले पाँच हवाले निम्न रूप से जुड़े हैं 1:1 भजन 102:25 नीति. 8:23, यशा. 40:21, 41:4, 26; यूहन्ना 1:1-2। यह पाँचों वचन जो अन्य पुस्तकों में लिखे हैं किसी न किसी तरह उत्पत्ति 1:1 से सम्बन्ध रखते हैं।



हूँ >> उत्पत्ति के प्रथम पृष्ठ पर मध्य कॉलम को हूँ। संगत वचनों का इस्तेमाल करते हुए अभ्यास करें।

आरम्भ	1:1 का 102:25	अवकाश के अन्तर में ज्योतिर्वर्ष हो, और वे तिथि, और विगत समये और दिनों और वर्षों के कारण हों।
1 अग्नि ने परमेश्वर ने अवकाश और पुन्नी की सृष्टि की।	जि. 8:23; यश. 42:21; 41:4,26; यश. 1:1-2; यश. 21,27; यश. 23, 24; यश. 8, 9, 10; यश. 18:1, 27:16; यश. 38:1, 39:1-2; यश. 40:22; 42:5; 51:13; यश. 18:13; 31:15; यश. 14:15; 23:30-32; यश. 38:1; यश. 39:1-2; यश. 40:21; 138:5; 140:5; यश. 37:16; 40:26.	15 और वे ज्योतिर्वर्ष अवकाश के अन्तर में पुन्नी पर इकरा देखावटी भी हों, " और वैसा ही हो यश।
2 पुन्नी नेहील और सुरघल पड़ी गई, और पत्थे जल के ऊपर अधिपता था; तब परमेश्वर को अन्ता जल के ऊपर स्पष्टता था।		16 तब परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतिर्वर्ष कवाई; उन में से बड़ी ज्योतिर्वर्ष को विर पर प्रभुत्व करने के लिये और छोटी ज्योतिर्वर्ष को रात पर प्रभुत्व करने के लिये बनाया; और तारागत को भी बनाया।
3 जब परमेश्वर ने कहा, "अविधता हो," तो अविधता ही यश।		17 परमेश्वर ने उनको अवकाश के अन्तर में इकलिये रखा कि वे पुन्नी पर इकरा दे,।
4 और परमेश्वर ने अविधता को देख कि अन्ता है; और परमेश्वर ने अविधता को अविधता से अलग किया।		18 तब दिन और रात पर प्रभुत्व करें, और अविधता को अविधता से अलग करें; और परमेश्वर ने देखा कि अन्ता है।
5 और परमेश्वर ने अविधता को विर और अधिपता को रात कहा; तथा सूर्य हुई विर और हुआ। इस प्रकार पन्ध्र दिन हो यश।		
6 फिर परमेश्वर ने कहा, "जल के बीच एक दिन अन्तर हो कि जल दो भाग हो जाए।"		

प्र 1 सर्वप्रथम पहले संगत वचन भजन 102:25 को देखें। कुछ शब्दों पर ध्यान दें जो भजन 102:25 और उत्पत्ति 1:1 दोनों में पाये जाते हैं। _____

प्र 2 मध्य कॉलम में 1:1 के नीचे कितने संगत वचन लिखे गये हैं? _____

प्र 3 आयतों के अनेकों विकल्प में से एक को चुनकर बतायें कि यह आयत उत्पत्ति 1:1 से किस प्रकार मेल खाती है। _____

प्र 4 बताएं कि उत्पत्ति 1:4 तथा 1:8 के लिए मध्य कॉलम में कितने अतिरिक्त वैकल्पिक वचन दिये गये हैं। _____



ढूँढें >> बहुत से बाइबल के संगत वचन कॉलम में न आने के कारण उन्हें आप कॉलम के दायें ओर अतिरिक्त वचनों के खण्ड में पा सकते हैं।

हो सब योबतान	35:6; 37:1; लैव 25:38; पर 15; ज्ञा 49:13; यहो 19:28; न्या 1:31; 18:28; 2पत्र 24:8;	10:23 किा 4:21 10:24 पर 21; लुका 3:5 10:27 खोल 27:18 10:28 पर 10:1; अण 6:19; भज 72:10,15; परा 69:6; खोज 27:22 10:29 पर 9:28; 10:11; 1पत्र 28:4; अण 22:24; 28:16; भज 45:9; परा 13:12 10:32 पर 1; ज्ञा 9:18 11:1 पर 6 11:2 ज्ञा 10:10 11:3 मिर् 1:14; 5:7; मिर् 43:9; परा 9:10; अण 5:11; ज्ञा 14:10 11:4 पर 1:28; 6:10; 8:1; अण 20:6; मिर् 51:53; ज्ञा 6:4; ल 30:3; 1पत्र 22:17; रस 3:6; भज 44:11; मिर् 31:10; 40:15; खोज 6:8; परा 3:2 ज्ञा 9:18; अण 4:27 11:5 पर 7; ज्ञा 18:21; मिर् 3:8; 18:11,18,20; भज 18:9; 144:5 11:6 पर 1 11:7 ज्ञा 1:26; पर 5; ज्ञा 42:23; ल 28:4 परा 28:11; 33:18; मिर् 5:15; 1पत्र 14:2,11 11:8 ज्ञा 9:19; ल 32:6; लुका 1:51 11:9 ज्ञा 10:10; भज 55:9; 1:2:5-11; परा 2:10,21; 13:14; 24:1 11:10 ज्ञा 2:4; लुका 3:35 11:12 लुका 3:35 11:14 लुका 3:35 मि 24:24 10:22 ज्ञा 14:1; परा 11:11; 21:2;	17 वा पीछे अपने खण्ड के बीच के सम 15 वा सर्वप्रथम, फिलिपिं का 21 वा रोग, जो बड़ा मर्दा वा 23 वाप्यरिथ और 1पत्र 1:17 में 'परा' का
--------------	---	--	---

समानार्थ व समान अनुच्छेद

आयतों की एक और प्रणाली आपकी सहायता करती है, वह है समानार्थ अनुच्छेद प्रणाली। जब दो या अधिक बाइबल के अनुच्छेद एक ही अर्थ प्रकट करने वाले या एक ही घटना को अलग-अलग स्थानों में प्रगट करते तो यह 'समानार्थ' ठीक उस अनुभागीय खण्ड के शीर्षक के साथ लिख दिया जाता है। उसके समानार्थ या लगभग समान अर्थ वाले अनुच्छेदों को "PP" अर्थात (समानार्थ अनुच्छेद) द्वारा दर्शाया गया है। उसी तरह के अनुच्छेद जिनका अर्थ समान नहीं है उन्हें "Ref" करके दर्शाया गया है।



ढूँढें >> क्या आप तस्वीर में समानार्थ उल्लेखों को खोज सकते हैं ?

MATTHEW 1	927	मत्ती 1
<p>यीशु की वंशावली 1:1-17pp - लुका 3:23-38 1:3-6pp - ज्ञा 4:18-22 1:7-11pp - 1पत्र 3:10-17</p> <p>1 अब्राहम की वंशज, दाऊद की वंशज, यीशु मसीह की वंशावली। 2 अब्राहम से इसहाक उत्पन्न हुआ, इसहाक से यकूब उत्पन्न हुआ, यकूब से यहूद और उसके भाई उत्पन्न हुए, 3 यहूद और लताय से विरियस और लताय उत्पन्न हुए, विरियस से हिस्रोन उत्पन्न हुआ, और हिस्रोन से यशम उत्पन्न हुआ,</p>	<p>1:1 289 7:12-16; अण 5:6, 7; 11:1; मिर् 23:5, 8; परा 9:2-7; लुका 1:32, 68; अण 22:16, 39 22:18; अण 3:19 1:2 28 21:5, 12; अण 25:20; अण 29:35; 48: 10 1:3 अण 38:27-30 1:5 18 11:31 1:6 189 49 1: 17:10; अण 12:34 1:10 28 23:25</p>	<p>14 अब्राहम से इसहाक उत्पन्न हुआ, दाऊद से अब्राहम उत्पन्न हुआ, और अब्राहम से इसहाक उत्पन्न हुआ, 15 इसहाक से इसहाक उत्पन्न हुआ, इसहाक से यशम उत्पन्न हुआ, और यशम से यकूब उत्पन्न हुआ, 16 यकूब से यहूद उत्पन्न हुआ, जो मरियम का पति था, और मरियम से यीशु जो मसीह कहा जाता है, उत्पन्न हुआ। 17 इस प्रकार अब्राहम से दाऊद तक सब पीढ़ें पीढ़ें हुईं, और दाऊद से मरियम की बंदी लेका हुईं, जो लताय की बंदी थीं, और बंदी लेकर बेबीलोन को लौटकर आने के समय में मसीह तक पीढ़ें हुईं।</p>

मत्ती की पुस्तक अध्याय 1 का शीर्षक: यीशु की वंशावली, बताता है। ठीक इस शीर्षक के नीचे तीन जोड़े समानार्थ अनुच्छेद दिये गये हैं। जिस तरह से किसी रेलगाड़ी की पटरियाँ समानान्तर रूप में एक साथ चलती हैं ठीक उसी प्रकार समानार्थ अनुच्छेद भी एक साथ चलते हैं- दोनों एक ही विषय पर बातें करते हैं। मत्ती 1:1 में समानार्थ अनुच्छेद के शीर्षक की पहली पंक्ति को देखें।

यह पंक्ति कहती है 1:1-17 PP-लूका 3:23-28। यह आपको संकेत देता है कि मत्ती 1:1-17 लूका 3:23-28 के समानार्थ है। लूका 3:23-28 को देखें, आप पायेंगे कि मत्ती 1:1-17 के अनुसार यहाँ भी यीशु मसीह की वंशावली लिखी हुई है।



ढूँँ >> मत्ती 1:1 के शीर्षक के नीचे लिखी दूसरी पंक्ति को देखें।

प्र 5 मत्ती 1:3-6 का समानार्थ अनुच्छेद क्या है ?

प्र 6 पुराने नियम में लिखित समानार्थ अनुच्छेद को पढ़ें। दोनों अनुच्छेद किस बात का वर्णन करते हैं ?

समानार्थ अनुच्छेद से हटकर समान अनुच्छेद, आपस में समान घटना या बिल्कुल एक जैसा अर्थ नहीं प्रगट करते। फिर भी अनुच्छेद दूसरे पर कुछ न कुछ प्रकाश डालता है। इस सिलसिले में आप बजाय PP के Ref लिखा हुआ पायेंगे।



ढूँँ >> अपनी बाइबल को मत्ती 25:14 की ओर खोलें।

तोड़ों का दृष्टान्त	
25:14-30Ref - लूका 19:12-27	
14 "क्योंकि यह उस मूल्य की सी दरह है जिसने पारदेश की समग्र अपने घरों को बुलकर अपने सम्पत्ति उनको सौंप दी।	
15 उमने एक को दस लौड़े, दूसरे को दो, और तीसरे को एक; अर्थात् हर एक को उसकी सम्पत्ति के अनुसार दिये, और तब पारदेश गया था।	
16 तब, जिसको दस लौड़े मिले थे, उमने तुलना जाकर उनसे लेन-देन किया, और दस लौड़े और कमाए।	25:29 पर 12:12; पर 4:25; लूका 9:18; 19:28
17 इन्हीं तीनों से जिसको दो मिले थे, उमने भी दो और कमाए।	25:30 पर 8:12
18 परन्तु जिसको एक मिला था, उमने जाकर निठुरे खोदें, और अपने घरों के दरवाजे बंद कर दिए।	25:31 लूका 17:33;
	31 "जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आया और सब स्वर्गदूत इसके साथ आएंगे, तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा।
	32 और सब जमीन उसके सामने झुकना की जाएगी, और जैसे सारासभ भेड़ों को कर्माियों में अलग कर देता है, वैसे ही वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा।
	33 वह भेड़ों को अपनी दायीं ओर और कर्माियों को बाईं ओर खड़ा करेगा।
	34 तब राजा अपने दायीं ओर जायेंगे से कहेगा, "हे मेरे पिता के धन लेने, अबसे, इस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जरा के अर्थ से तुम्हारे लिए तैयार किया था है।
	35 क्योंकि मैं भूखा था, और तुमने मुझे खाने को दिया, मैं ग़मना था, और तुमने मुझे पानी पिलाया; मैं परदेशी था, और तुम ने मुझे अपने

तोड़ों के दृष्टान्त शीर्षक के नीचे देखें। ध्यान दें वहाँ लिखा है 25:14-30 Ref — लूका 19:12-27। शब्द Ref, reference अर्थात् हवाले का छोटा रूप है। जब आप अपनी बाइबल को लूका 19:12-27 की ओर पलटेंगे तो पता चलेगा कि वहाँ पर भी मत्ती 25:14 के समान तोड़ का दृष्टान्त है। यद्यपि दोनों दृष्टान्त बहुत फरक हैं परन्तु फिर भी दोनों, तीन सच्चाईयों को व्यक्त करते हैं।

प्र 7 दोनों दृष्टान्तों में व्यक्त सच्चाईयों को लिखें: _____



बाइबल के आकर्षक तथ्य

- बाइबल का अधिकतर भाग इब्री भाषा में तथा कुछ भाग अरामी भाषा में लिखा गया।
- नया नियम मूल रूप से कोईनी यूनानी भाषा में लिखा गया था।
- सर्वप्रथम बाइबल लैटिन भाषा में 1450 में नई आविष्कार हुई गटनबर्ग प्रिंटिंग प्रेम में छपी थी।
- सर्वप्रथम इंगलिश बाइबल 1535 में छपी थी।
- सन 2007 तक बाइबल 429 भाषाओं में अनुवाद की जा चुकी है जबकि बाइबल के अनेकों हिस्से 2426 भाषाओं में अनुवाद हो चुके हैं।
- संसार भर के इतिहास में बाइबल किसी भी पुस्तक की तुलना में सर्वाधिक छपी गयी पुस्तक है।

4

कुंजी आयतों की व्याख्या

आपकी बाइबल के प्रत्येक पृष्ठ के निचले भाग में आप कुंजी वचन का व्याख्यान पाएंगे। यह नोट्स आत्मा से पूर्ण दृष्टिकोण के तहत लिखे गये हैं। ये शब्दों व वाक्यों के अर्थ को प्रगट करते हैं। ये बाइबल के सिद्धान्तों व सच्चाईयों को परिभाषित व उसकी व्याख्या करते हैं। यह नोट्स विश्वास, आज्ञापालन, प्रार्थना, और अनुग्रह द्वारा परमेश्वर के साथ सम्बन्ध विकसित करने की महत्वता पर जोर डालते हैं।

यह नोट्स परमेश्वर के साथ मसीहियों के रोजमर्रा के जीवन हेतु लाभदायक जानकारियाँ उपलब्ध कराते हैं। इसमें जीवन सम्बन्धी जानकारियाँ जैसे ईश्वरीय सन्तानों की परवरिश करना, चिन्ताओं पर विजय प्राप्त करना, और परीक्षा का कैसे सामना करें इत्यादि शामिल हैं।



ढूँहें >> अपनी बाइबल का प्रथम पेज निकालें (उत्पत्ति अध्याय एक)। क्या आप पृष्ठ के निचले हिस्से में व्याख्यान या स्टडी नोट्स को देखते हैं ?

1:1 **आदि में परमेश्वर ने सृष्टि की।** 'आदि में' शब्द इस बात पर उभर देता है कि ध्यान अवधारित करता है कि यही समय में आरंभ था। अन्य पुराने धर्म, सृष्टि के जिनका मतलब हुआ पातलि है कि सृष्टि किसी पूर्व अवस्था से शुरू की गयी है जिसका अर्थ सृष्टि में पहले था। वे इतिहास को एक चक्र के रूप में बार बार अलग अलग देखते हैं। बाइबल इतिहास को एक सीधे तौर पर जोर देता है कि यह ईश्वर द्वारा बनाया गया है। सृष्टि के निर्माण में परमेश्वर की योजना थी और जिसे वह पूरा करने का। परमेश्वर एक सृष्टि में उसकी सृष्टिकार के विषय में (देखें **सृष्टि, पृष्ठ 5**)।

बाइबल के इस पहले ही पद में निम्नलिखित सन्देशों के द्वारा कुछ सम्बंधित बातें साफ़ निकलती हैं: (1) सृष्टि का प्रारंभ जो आज अस्तित्व में दिखाई देता है उनका स्रोत परमेश्वर ही है, अतः सृष्टि का स्रोत सृष्टि, वे अपने अन्तर्गत अस्तित्व में नहीं हैं परन्तु अपने होने तथा बने रहने के लिए परमेश्वर पर अवलंबित होते हैं। (2) समस्त अस्तित्व एक ही स्रोत एक परमेश्वर के द्वारा सृष्टि में ही है तथा उस पर अवलंबित है तो बहुत भला है। (3) समस्त सृष्टि व जीवन अन्तर्गत के लिए अर्थात् पूर्व व अर्थात् पूर्व होती है। (4) परमेश्वर की प्रथमता का

या का ता' मूल 25 (13)। बाइबल का यह विश्वास है कि सृष्टि के लिए प्रथम स्रोत के होने से सर्वोच्च अन्तर्गत 'सृष्टि' व 'शक्ति' के रूप में किया गया है (पृष्ठ 5; तुलना करें निर्णय 20:11)। अन्य यह विश्वास करते हैं कि 'सृष्टि' व 'शक्ति' का रूप इस बात को दर्शाते हैं कि सृष्टि का निर्माण सृष्टि के कार्य के समान होने को 'सृष्टि' कहा गया और अन्तर्गत सृष्टि पर प्रारंभ को लेकर आता है।

1:7 **अन्तर**। यह 'अन्तर' शब्दों में प्रारंभ व आरंभ में अस्तित्व के रूप में सृष्टि के रूप में एक स्रोत सृष्टि को बना गया है।

1:10 **यह अन्तर था**। सृष्टि का परमेश्वर ने कहा कि जो कुछ अपने रूप है वह 'अन्तर' है (पृष्ठ 4, 10, 12, 18, 21, 25, 31)। परमेश्वर की सृष्टि का प्रारंभ था उसकी शक्ति व इच्छा अस्तित्व की पूरी शक्ति से पूरी शक्ति का था। परमेश्वर ने, सृष्टि की सृष्टि अपने अस्तित्व प्रारंभ करने के लिए शक्ति और शक्ति ही सृष्टि के रूप अस्तित्व शक्ति व जीवन में सृष्टि परमेश्वर के रूप में का अस्तित्व ही प्रारंभ ही सृष्टि के लिए कि सृष्टि (1) के परमेश्वर ने सृष्टिकार व अन्तर्गत में सृष्टि के कार्य को किया।



ढूँहें >> पृष्ठ 5 के निचले भाग में व्याख्या को देखें। उन नोट्स पर आधारित कुछ प्रश्नों के उत्तर दें।

- प्र 1 उत्पत्ति 1:5 के लिए व्याख्या को पढ़ें। 'दिन' के लिए इब्रानी शब्द क्या है ?

- प्र 2 उत्पत्ति 1:7 के लिए नोट्स को पढ़ें। 'अन्तर' किस बात को प्रगट करता है ?

- प्र 3 उत्पत्ति 1:10 के नोट्स को पढ़ें। सृष्टि की रचना के पाँचवे दिन परमेश्वर ने क्या रचा ?

- प्र 4 उसी नोट्स में ध्यान दें कि परमेश्वर ने सृष्टि की रचना के छठे दिन क्या रचा ?

आपको महसूस होगा कि यह नोट्स आपकी व्यक्तिगत बाइबल अध्ययन के लिए एक अद्भुत उत्साह व मार्गदर्शन का स्रोत है। इन नोट्स के अन्दर पर्याप्त सामग्री है, जिसके द्वारा आप दूसरों को शिक्षा देने हेतु अध्याय तैयार कर सकते हैं। **विषय सूची** के अन्दर, जो आपकी बाइबल के अन्त में पेज संख्या 1385 से प्रारम्भ होती है, बताती है कि जिन विषयों पर व्याख्या द्वारा चर्चा की जा रही है वह बाइबल में कहाँ उपलब्ध हैं।

विषय सूची		
यह विषय सूची आपको विभिन्न विषयों को निर्धारित करने में सहायक होगा जो अभ्युपनिषद् और लेखों में बताया गया है। कुछ शब्दों को सुस्पष्ट दर्शाया गया है।		
अनुभव, कर्त्तव्य सारे विचारों और पाठ्यपत्रों पत्रिका 2.8 पत्रिका 22:25-28 मातृका 12:38 वेब 3:17 वेब 2:17 सोपान पत्रिका 10:21 वेब 10:2 21-1 21:2, 17 पत्रिका 10:10 वेब 8:4, 5 1 पत्र 2:23 12:8	वे 1:21 अन्वयिका धन का वेब : वे 20:22; 1 पत्र 5:2 वे 13:17 अन्वयिका : वे 8:8; 14:25; 28:28; 1 पत्र 8:22 वेब लेख अन्वयिका वेब लेख सोपान - वेब 1 पत्र 3:2-4, 7; 4:12 अन्वयिका का वेब : 1 पत्र 8:14, पत्र 8:8, 1 पत्र 8:17 अनुभव का वेब है पत्रिका 3:7 3 पत्रिका 23:13 1 पत्र 10:13 2 पत्र 12:8 वेब 4:10 2 पत्र 1:3 वेब 2 पत्र 1:5	1 पत्र 4:8, 8 अन्वय वेब 18:11; 28:28 1 पत्र 21:17 वेब 8:1 पत्र 7:17; 9:1-23 वेब 8:10 वेब 3:5 वेब 22:19-18; 30:7 वेब 1:3-4 अन्वयिका वेब 18:28; 2 पत्र 8:1; पत्र 48:22-28; 60:4- 21; पत्रिका 47:21-23; वेब 2:23; वेब 8:22; 21:24; वे 18:28; वे 2:1

5

मुख्य शीर्षकों पर लेख

आपकी अग्रिमय बाइबल के भीतर विभिन्न प्रकार के लेखों का संग्रह है जो 77 शीर्षकों का विस्तृत व्याख्यान करता है। यह लेख अधिकतर बाइबल के उस पाठ्य सामग्री (अनुच्छेद) के पास लिखा होता है जो अनुच्छेद लेख के मूल विषय से मेल खाता हो। प्रत्येक लेख सोने की खान के समान है जो उस विशेष विषय पर जानकारी का खजाना उपलब्ध कराता है। आप इस 77 विषयों की सूची को अपनी बाइबल के प्रारम्भ में प्राप्त विषय सूची के ठीक बाद में पा सकते हैं। **विषय सूची: लेख** वाला पृष्ठ केवल आपको शीर्षक या विषय की ही जानकारी नहीं देता बल्कि पृष्ठ संख्या भी बताता है जहाँ आप इन विषयों को बाइबल में देख सकते हैं।

विषय-सूची : लेख

सृष्टि	6	सैतान व पुद्गालों पर अधिकार	983
अब्राहम की बुलाह	19	छुटे शिष्यक	998
अब्राहम इस्लाम व यहुद के साथ परमेश्वर की बाब	34	विद्यार्थियों के विन	1004
परमेश्वर का प्रवचन	58	नए नियम में दाखल (I)	1020
कथ	77	यीशु व पवित्रता	1028
पुराने नियम की स्पष्टता	87	एक सम्पत्ति व वरिष्ठता	1038
शास्त्रिगत का दिन	128	नए नियम में दाखल (II)	1058
पुराने नियम में दाखल	150	नया जन्म	1060
उभू का भय	160	शिष्यों का नया जन्म	1087
इब्रानियों के साथ परमेश्वर की बाब	211	पवित्र आत्मा का बर्तमान	1100
कथियों का नया	225	अन्धकार में बोलना	1102
स्वर्गदूत (I) और उभू का स्वर्गदूत	246	पवित्रता का सिद्धान्त	1108
बर्तमान का स्वरूप	284	आभा में बर्तमान की पाठ	1117

इन जानकारियों के अन्तर्गत सम्पूर्ण बाइबल से प्राप्त सभी विषयों सम्बन्धित गहन खोज करे गये बहुमुखी वचनों को शामिल किया गया है। किसी खास विषय पर अपने ज्ञान को विकसित करने के लिए आप इन जानकारियों का इस्तेमाल कर सकते हैं। यह आपकी संदेश व अध्याय तैयार करने तथा व्यक्तिगत अध्ययन करने में सहायता करेंगे।



ढूँढें >> अपनी बाइबल का सर्वप्रथम लेख देखें। यह लेख सृष्टि के बारे में बताता है।

सृष्टि 1
6
GENESIS 1

सृष्टि

उत्तर 1:1 "आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।"

सृष्टि का परमेश्वर (1) बाइबल में परमेश्वर, प्रकटित किया है जो समस्त बतों का प्रथम कारण है। कोई भी ऐसा धर्म नहीं है जिसमें परमेश्वर का अस्तित्व न हो। जैसा कि मूला विचार है "इससे पहले कि यह इतना कुछ था जो ने पृथ्वी और आकाश की सृष्टि की बाग़्-अद्वैतवादी से अलग-अलग एक ही ईश्वर है" (पत्र 00:2)। इसका सीधा अर्थ यह है कि सृष्टि विषय के निर्देश के पूर्व परमेश्वर अस्तित्व में अस्तित्व में थे। परमेश्वर स्वयं व पृथ्वी में सृष्टि सबसे ऊपर, स्वयं तथा पहले था जहाँ वे (देखें 1:1-2, 1:6-18, टिप्पणी देखें कुल 1:18)।

(2) परमेश्वर को एक व्यक्तिगत प्राणी के रूप में प्रकटित किया गया है जिसने आदम व हवा को "अपने ही सम्बन्ध में स्वरूप (उत्तर 1:27; देखें 1:26 टिप्पणी)। चूंकि आदम और हवा परमेश्वर के स्वरूप में सृष्टे गए, वे परमेश्वर को प्रकृतिक देवों और अन्य बतों रख सके और वह भी ईश्वर के स्वरूप व व्यक्तिगत रीति थे।

(3) परमेश्वर को एक वैश्विक प्राणी के रूप में भी प्रकटित किया गया है जिसने सब कुछ अन्धकार इतिहास लिखा था। जब परमेश्वर ने सृष्टि सफल की और देखा कि सब कुछ अपने स्वरूप है तो पाया कि सब कुछ "बहुत अच्छा" है (उत्तर 1:31)। चूंकि आदम व हवा परमेश्वर के स्वरूप व सम्बन्ध में सृष्टे गए थे, वे भी बिना पाप के थे (देखें उत्तर 1:26, टिप्पणी)। पाप उस समय मनुष्य के अस्तित्व में प्रवेश कर गया जब सर्प अन्धकार जीवन ने हवा को परीक्षा में विरा दिया (उत्तर 3; देखें रो 5:12; पत्र 12:9)।

प्र 1 आप इस बात को पहचान पायेंगे कि यह प्रथम लेख चार भागों में बाँटा गया है। इन चार भागों के नाम लिखें।

प्र 2 लेख के प्रथम भाग में दूसरे अनुच्छेद (2) को ढूँढें। निम्नलिखित वाक्य को वहाँ ढूँढें और इस वाक्य को पूरा करें: "क्योंकि आदम और हवा परमेश्वर के स्वरूप में बनाये गये थे, वे ..."

विषय सूची जो आपकी बाइबल के पिछले हिस्से में पेज संख्या 2043 में शुरू होती है बताती है कि कहाँ पर आप उन विभिन्न विषयों को प्राप्त कर सकते हैं जिसकी चर्चा लेख व व्याख्या में की गयी है।

6

प्रसंग खोजी

अपनी अग्रिमय बाइबल के अनेकों पृष्ठों पर आप बहुत से चिन्हों को पृष्ठ के किनारों पर खड़ी रेखा के साथ कुछ तस्वीरों द्वारा छोटे दृष्टान्त को समझाते हुए देखेंगे। इसमें से प्रत्येक चिन्ह, पवित्र आत्मा की परिपूर्णता में जीवन बिताने के एक महत्वपूर्ण व खास विषय को प्रस्तुत करता है। प्रत्येक रेखा के नीचे बाइबल का कुछ खण्ड लिखा होगा जो आपको ठीक उसी विषय पर बाइबल के अगले पठन कार्यक्रम तक पहुँचा देगा। यह प्रसंग खोजी के चिन्ह व उनके अर्थ हैं:

प्रसंगखोजी

इस बाइबल के अनेक पृष्ठों पर बराबर चिह्न दिए गए हैं। निम्नलिखित रीति के प्रत्येक उद्देश्य को यह चिह्न दर्शाते हैं।

-  - बर्तिसमा में/पवित्रात्मा से भाग जाना (निर्गमन 31:1-8 में आरम्भ)
-  - पवित्रात्मा का उपवन (निर्गमन 36:30-35 में आरम्भ)
-  - पवित्रात्मा का फल (उत्पत्ति 80:19-21 में आरम्भ)
-  - संघर्ष (उत्पत्ति 20:17-18 में आरम्भ)
-  - विश्वास जो पराङ्ग को हिला दे (उत्पत्ति 15:3-6 में आरम्भ)
-  - बर्बादी देना (निर्गमन 10:1-2 में आरम्भ)
-  - उद्धार (उत्पत्ति 12:1-3 में आरम्भ)
-  - दूसरा आगमन (ध्वज चिह्न 65:8-9 में आरम्भ)
-  - जीवन और कुटुम्बा पर नियंत्रण (उत्पत्ति 3:15 में आरम्भ)
-  - संघर्ष और सामरिकता पर नियंत्रण (उत्पत्ति 19:15-26 में आरम्भ)
-  - मृत्यु (निर्गमन 15:1-21 में आरम्भ)
-  - धर्मिकता और आशाकरिता में बलाघ (उत्पत्ति 5:22 में आरम्भ)

प्रत्येक चिह्न, साथ ही नई आयतों के उद्देश्य को दर्शाते हैं। बाइबल के पृष्ठों के साथ लम्बरय रेखा खींची हुई है जिसके अंत में आयतों को निर्दिष्ट किया गया है जो उक्त चिह्न के विषय में अधिक जानकारी देती हैं।



ढूँढें >> उत्पत्ति अध्याय 3 आयत 15 ढूँढें (उत्पत्ति 3:15)। यह पहला स्थान है जहाँ पर आपकी बाइबल में प्रसंग का इस्तेमाल किया गया है। प्रसंग खोजी चिन्ह को देखें तथा निम्न प्रश्नों के जवाब दें।

<p>2 खी ने सर्प से कहा, "इस वटिका के फलों के फल हम खा सकते हैं।"</p> <p>3 पर जो वृक्ष वटिका के बीच में है, उससे फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उससे खाना और न उससे खून, नहीं तो मर जाओगे।"</p> <p>4 तब सर्प ने खी से कहा, "तुम मिलापन न मारो।"</p> <p>5 तब परमेश्वर आग लगाता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी, और तुम अपने बुरे का इलाक़ा परमेश्वर के सामने ही खोजोगे।"</p> <p>6 अतः जब खी ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने के लिए अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये पाक्षेययोग्य भी है, तब उसने उसमें से तोड़कर खाया, और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया।</p> <p>7 तब उन दोनों की आँखें खुल गईं, और उन्होंने सबकुछ देखा कि वे नंगे हैं, इसीलिए उन्होंने अर्जल के पत्ते जोड़-जोड़ कर लपेट बना लिये।</p> <p>8 तब सर्वोच्च परमेश्वर, जो दिन के उदये समय वटिका में फिरता था, का लक्ष्य उनको सुरक्षित किया। तब आत्म और उसकी पत्नी वटिका के</p>	<p>उत्प 11:3 3:6 अथ 1:28; 14:18,19; पञ्च 7:5; पञ्च 16:14; पञ्च 28:2 3:6 पञ्च 1:14-15; 1पुत्र 2:16; 1पुत्र 20:7,8; 1पुत्र 44:19,19:24; उत्प 11:3; 1पुत्र 2:14 3:7 अथ 2:25; पञ्च 27 3:8 लैव 20:12; पञ्च 23:14; 1पुत्र 12:16; उत्प 7:31; 30:34-22; 33:44; 5:5; 129:7-12; पञ्च 28:19; 1पुत्र 10:17; उत्प 24:48; 10; पञ्च 8:15-18 3:9 अथ 4:5; 10:8; 10:8; 10:18; 13 3:10 लैव 18:18; उत्प 10:1; पञ्च 5:5; 1पुत्र 12:16; अथ 2:25 3:15 अथ 2:25; उत्प 2:17</p>	<p>11 उसने कहा, "किसने मुझे बताया कि तू गंध है? जिस वृक्ष का फल खाने को मैं ने तुझे मना किया था, क्या तू ने उसका फल खाया है?"</p> <p>12 आत्म ने कहा, "जिस खी को तू ने मेरे पास रक्षित कर दिया है उसने ने इस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैं ने खाया।"</p> <p>13 तब सर्वोच्च परमेश्वर ने खी से कहा, "तू ने यह क्या किया है?" खी ने कहा, "सर्प ने मुझे बहाना दिया, तब मैं ने खाया।"</p> <p>14 तब सर्वोच्च परमेश्वर ने सर्प से कहा, "तू ने जो यह किया है इसलिये तू सब पत्तों पर पतुओं, और सब बगैचे पर पतुओं से अधिक दुर्लभ है; तू पेट के बल पर खाता, और जीव पर मिट्टी काटा होता है।</p> <p>15 और मैं तेरे और इस खी के बीच में, और तेरे बंध और इसके बंध के बीच में बैर डालना करूँगा; वह तेरे सिर को ऊपर उठेगा, और तू उसकी पट्टी को हलेंगा।"</p> <p>3:12 अथ 2:22 3:13 7:7-11; उत्प 11:3; लैव 2:14 3:14 पञ्च 28:19:20; पञ्च 23:8; पञ्च 23:48-29; पञ्च 7:17 3:15 अथ 8:44; 9:12-18; 1पुत्र 3:6; पञ्च 10:11; पञ्च 13:5; पञ्च 7:14; 8:3; 9:5; पञ्च 1:25; पञ्च 9:31; पञ्च 4:4; पञ्च 12:17; 1:16-26; पञ्च 2:14 12 पञ्च लैव 15 का इस्तेमाल</p>
---	---	---

प्र 1 उत्पत्ति 3:15 के बराबर में दिये गये चिन्ह का मतलब क्या है ?

प्र 2 सीधी रेखा उस प्रसंग में कितनी आयतों को शामिल होता हुआ दिखाती है ?

प्र 3 सीधी रेखा के अन्त में लिखी गयी आयत आपको बताती है कि बाइबल में यह प्रसंग और कहाँ लिखा हुआ है। वह हवाला या आयत क्या है ?



पांच फासले

हमारे और जिन्होंने पवित्र शास्त्र को लिखा था उनके बीच बहुत से फासले हैं। यह फासले हमारे लिए बाइबल को समझने में कड़ी चुनौती खड़ी करते हैं, परन्तु अध्ययन बाइबल की खास विशेषताएं हमें इन फासलों को दूर करने में सहायता करते हैं।

समय का फासला: नये नियम की किसी भी पुस्तक के लिखे जाने और हमारे बीच 2000 वर्षों के लम्बे समय का फासला है। और पुराना नियम तो 3,400 वर्षों पूर्व लिखा गया था।

संस्कृति का फासला: जो लोग बाइबल के समय में रहते थे उनका रहन-सहन, संस्कृति, परम्पराएं रीतियाँ और व्यवहार हमसे कहीं अलग थे। वे मन्दिरों और अराधनालयों में आराधना करते थे, वह एक दूसरे का अभिवादन पवित्र चुम्बन से करते थे, और जानवरों का बलिदान चढ़ाते थे।

भाषा में अन्तर: बाइबल कालीन लोग इब्रानी, अरामी या यूनानी भाषा बोला करते थे- अर्थात् बाइबल इन भाषाओं में लिखी गयी थी। समय के गुजरते-गुजरते भाषाएं बदल जाती हैं। नये-नये शब्दों का उदय होता है और पुराने शब्द दफन हो जाते हैं।

ऐतिहासिक फासला: बाइबल की प्रत्येक पुस्तक इतिहास के एक विशेष काल में लिखी गयी है। उदाहरण: परमेश्वर के वचन का कुछ हिस्सा गुलामों, योद्धाओं, स्वामियों तथा कैदियों के बारे में लिखा है। परमेश्वर ने अपना वचन यहूदियों और यूनानियों पर व्यक्त किया। अतः बाइबल सही मायनों में समझने के लिए हमें शताब्दियों का अध्ययन करना ज़रूरी है।

भौगोलिक फासला: बाइबल की प्रत्येक आयत की पृष्ठभूमि किसी न किसी स्थान से जुड़ी हुई है। जिससे हमें बाइबल के, शहरों, नदियों, पर्वतों, इलाकों तथा देशों के बारे में सीखने का अवसर प्राप्त हो जाता है।

7

प्रसंगखोजी अनुक्रमणिका

प्रसंगखोजी चिन्ह आपकी बाइबल में 12 कुंजी विषयों को दर्शाते हैं। आप इन चिन्हों को अपनी बाइबल में अलग-अलग स्थान पर देख सकते हैं। प्रत्येक चिन्ह हमें उसके खास विषय की ओर आकृषित करता है। लेकिन कुछ स्थानों पर आप एक विषय को लेकर अनेक अनुच्छेदों का अध्ययन करना चाहेंगे। उदाहरण के लिए शायद आप 'पवित्र आत्मा से परिपूर्ण' के लिए बाइबल के सारे सम्बन्धित वचनों व अनुच्छेदों को पढ़ना चाहेंगे। आप इस विषय से सम्बन्धित सारे अनुच्छेदों को धीरे-धीरे निर्गमन 31:1 के बराबर में अंकित कबूतर की तस्वीर का अनुसरण करने से प्राप्त कर सकते हैं। कबूतर के नीचे आप गिनती 27:18 को पायेंगे, जो 'पवित्र आत्मा से परिपूर्ण' होने से सम्बन्धित अगला अनुच्छेद है। और जब आप गिनती 27:18 के बराबर में अंकित कबूतर को प्राप्त कर लेते हैं तो उसके नीचे आप एक और आयत लिखी हुई देखेंगे जो आपको अगले कबूतर की ओर अगुवाई करेगी, और इस तरह सिलसिला आगे बढ़ता जायेगा।

परन्तु एक ही विषय पर सारी आयतों को ढूँढ़ने के लिए इससे भी सहज तरीका प्रसंगखोजी-अनुक्रमणिका का इस्तेमाल करना है, जो कि आपकी बाइबल के पिछले हिस्से में पृष्ठ संख्या 1399 में दी गयी है।



ढूँढ़ें >> बाइबल के पिछले हिस्से में लिखी प्रसंगखोजी अनुक्रमणिका को खोजें। और अब इन प्रश्नों के उत्तर दें।

प्र 1 “पवित्र आत्मा के वरदान” विषय के लिए कॉलम में से प्रथम व अन्तिम वचन को लिखें।

प्र 2 न्यायियों की पुस्तक में कितनी बार “पवित्र आत्मा में बपतिस्मा” विषय प्रगट होता है ?

प्र 3 “दूसरे आगमन” विषय पर कितनी बार वर्णन किया गया है ?

प्र 4 “दूसरे आगमन” विषय को लेकर प्रकाशित वाक्य की पुस्तक में व्यक्त पाँच हवालों को लिखें।

प्र 5 “आज्ञाकारिता और धार्मिकता में चलना” विषय के सम्पूर्ण वचनों को खोजें। इस सूची में लिखी गयी प्रथम आयत को लिखें।

8

मानचित्र व चार्ट

आपकी अग्निमय बाइबल में दिये गये मानचित्र व चार्ट, आपको बाइबल समझने में सहायतार्थ महत्वपूर्ण औज़ार है। मानचित्र, बाइबल में बताये गये स्थानों को ढूँढ़ने में आपकी सहायता करते हैं। इस बाइबल में आपके लिए दो प्रकार के मानचित्र दिये गये हैं। (1) काले व श्वेत मानचित्र (2) रंगीन मानचित्र। अपनी बाइबल में मानचित्र व चार्ट को ढूँढ़ने के लिए अपनी बाइबल की विषय सूची के नज़दीक **सूची: मानचित्र व चार्ट** को देखें:

सूची : मानचित्र व चार्ट

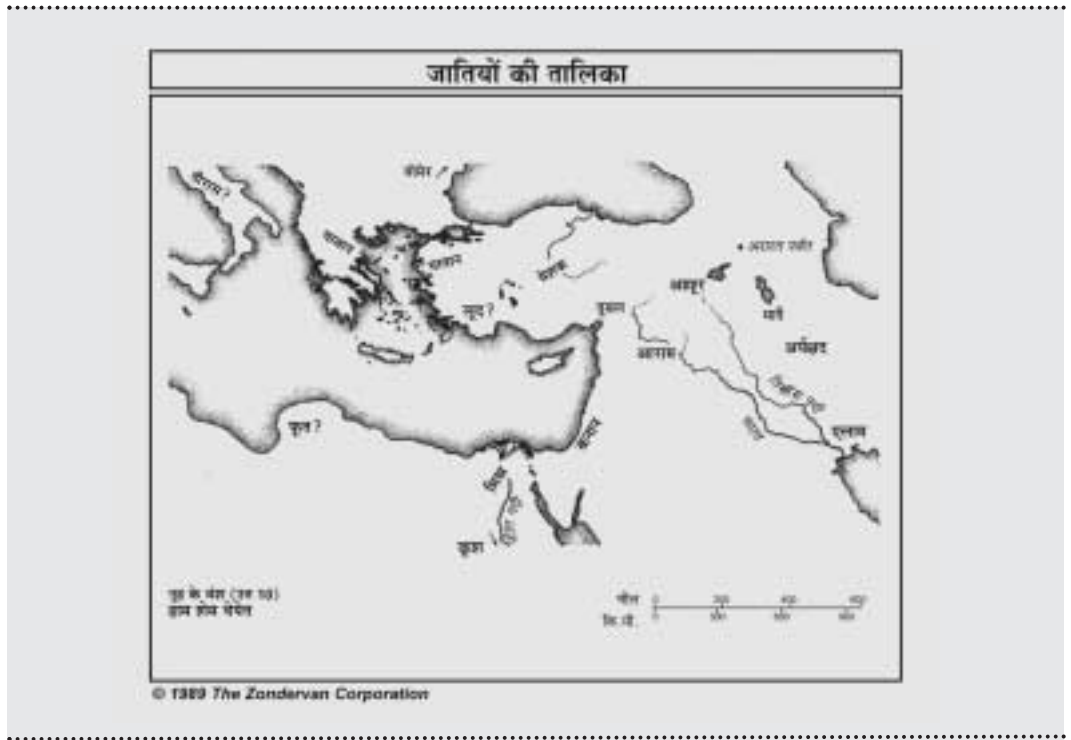
जड़ियों की तस्वीरें	16	नया बाबुल साम्राज्य	853
सबूब की वास्तु	42	योन की पुस्तक	875
निर्मित	60	मलाकी में खीसा तक	821
इशानी लिपि पर	62	स्यूरी रथ	946
मिस्र का तम्बू	67	परमेश्वर के राज्य के मुकामले जीवन वर राज्य	973
मिस्र के तम्बू वर समान	67	फिनिसीया और परदन के भाग के क्षेत्र	988
पुराने लिख के बलिदान	115	येशु वनील में	1040
पुराने लिख के चर्च	135	दुखभोग भण्ड	1044
कथन के मुख्य वैदिक विन्यास	204	येशु खूँदिस व समरिया में	1073
कनन पर खिजव	232	येशु की सेफरई	1089
सुलेमान का पत्थरालेम	332	येशु के दृष्टान्त	1092
सुलेमान का बन्दर	337	येशु के इतिहास के आरम्भिक	1093
बन्दर वर समान	337	फिनेकुस पर खीसा देश के लोग	1098
विषयवित्त राज्य	346	फिलिपुस व वलस की मिशानरी वास्तु	1118
इतिहास व इतिहास वर जीवन	358	पेट्रुस की पहली मिशानरी वास्तु	1121

काले व श्वेत मानचित्र

मानचित्र में आप पायेंगे कि समुद्र व झील के किनारे पर बसे भूमिगत स्थानों के बिन्दुओं से बनी सीमा रेखा द्वारा दर्शाया गया है। इस मानचित्र के बीचोंबीच बना बड़ा समुद्र भूमध्यसागर है। इस मानचित्र के मध्य में निचले स्थान पर लाल समुद्र का ऊपरी सिरा दो उंगलियों के समान नज़र आता है।



ढूँढें >> अपनी बाइबल के सामने वाले पृष्ठ पर 'चार्ट व मानचित्र की सूची' में जातियों की तालिका नामक प्रथम मानचित्र की पृष्ठ संख्या को ढूँढें। अपनी बाइबल में इस नक्शे की तरफ चलें। यह नक्शा आपको उत्पत्ति 10 समझने में सहायता करता है।



प्रत्येक नक्शे के निचले भाग में आप मानचित्र के पैमाने को पाएंगे। यह पैमाना मानचित्र में मील तथा किलोमीटर के हिसाब से दर्शाये गये स्थानों की दूरियों को समझने में सहायता करता है। जातियों की तालिका के पैमाने के अनुसार 1 सेन्टीमीटर 200 मील या 300 किमी के बराबर है। यदि आप अराम से अश्शूर की दूरी को नापें तो वह लगभग 1 सेन्टीमीटर के बराबर है। इसका अर्थ हुआ कि इन दोनों स्थानों के बीच की दूरी लगभग 200 मील या 300 किलोमीटर है।



ढूँढें >> उत्पत्ति 10:22 पढें । आप इस वचन को अपनी बाइबल में जातियों की तालिका में पायेंगे ।

प्र 1 क्या आप इस आयत में शेम के पाँच पुत्रों के नाम ढूँढ सकते हैं ? जिसमें पहला नाम एलाम है । पाँच नामों को नीचे लिखें ।

अब इन्हीं पाँच नामों को जातियों की तालिका नामक नक्शे में ढूँढें । यह उन स्थानों को दर्शाते हैं जहाँ पर शेम के पुत्रों ने जीवन व्यतीत किया ।

प्र 2 अराम से अश्शूर कितना दूर है ?

प्र 3 एलाम के नजदीक दो नदियों के नाम क्या हैं ?

रंगीन मानचित्र

विभिन्न प्रकार के काले व सफेद चित्रों के अलावा आपकी बाइबल में पीछे की ओर अनेकों रंगीन मानचित्र दिये गये हैं। आपकी बाइबल के पीछे इन रंगीन मानचित्रों के लिए चित्रों से पहले अनुक्रमणिका दी गयी है। रंगीन मानचित्र की इस अनुक्रमणिका में जगहों के नाम वर्णमाला के क्रमानुसार दिये गये हैं। आप इस अनुक्रमणिका का इस्तेमाल बाइबल में लिखी अनेकों जगहों (स्थानों) को ढूँढ़ने के लिए कर सकते हैं।



ढूँढ़ें >> अपनी बाइबल के पीछे बनी “रंगीन चित्रों की अनुक्रमणिका” को देखें।

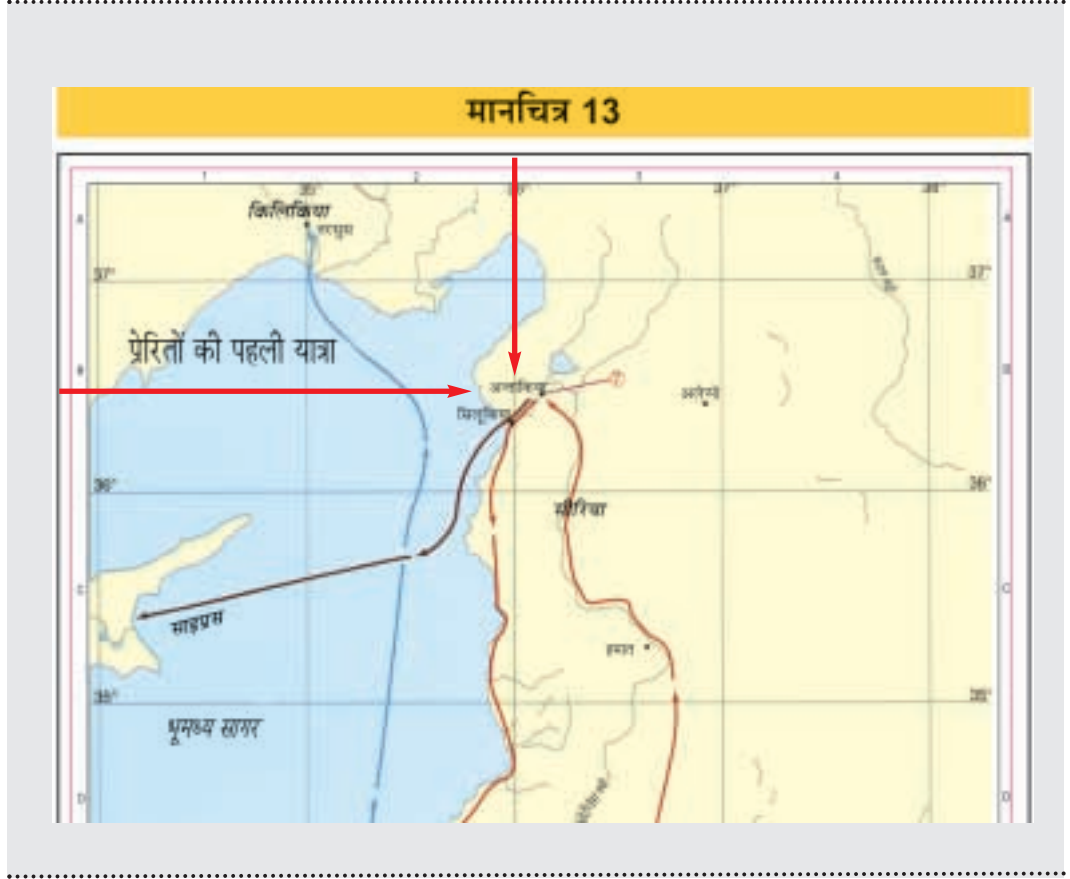
रंगीन मान-चित्र सूची

अनुक्रमणिका 10 B4	इस्रा 7 B2	किरा औरशुभ का जल 10 D2
अनुक्रमणिका 10 B5	अनू. शहर 10 B5	किरा औरशुभ के बंद काल 10 D2
अनू. 4 C2	अनू. बन्धन 1 C5	किरा 10 C3, 12 B1, 13 F1, 14 C2, 15 B4
अनू. 2 B4, 3 B2	अनू. 1 B4	किरा का विधिवत 12 A2, 13 E2
अनू. 10 C4, 14 B1	अनू. 7 B2	किरा का विधिवत और शहर का जल 12 D2
अनू. 15 B3	अनू. 1 C6, 7 C3	किरा अन्तकिया का दक्षिण जल 10 D2
अनू. 1 C3, 2 C3, 3 C1, 4 C1, 5 B2	अनू. की लीला 1 C4	किरा का जल 10 C5
अन्तकिया का जल 10 C2	अनू. 2 C3	किरा का जल 10 C5, 15 A2
अनू. 14 B2	अनू. 457-428 ई.पू. 7 C3	अनू. 15 B3
अनू. 13 B2, 14 B3, 15 B4	अनू. 2 D4	अनू. 15 B3
अनू. शहर का जल 11-25	अनू. 6 B1, 7 B2, 10 C4	अनू. 12 B2

ध्यान दें कि इस सूची में स्थानों के नाम वर्णमाला के शब्दों के क्रमानुसार लिखे गये हैं। अक्षर के नाम के पश्चात पहली संख्या उस मानचित्र की संख्या को प्रगट करता है जिसमें वह स्थान दर्शाया गया है। मानचित्र संख्या के पश्चात आप एक और अक्षर के साथ एक अंक को पायेंगे। ये अक्षर व अंक आपको बताते हैं कि मानचित्र में आप उस स्थान को कहाँ ढूँढ़ें। रंगीन मानचित्र से, उसकी सूची का इस्तेमाल करते हुए स्थानों को खोजने का अभ्यास करें। उदाहरण के लिए सूची में से अन्तकिया शहर को ढूँढ़ें। अन्तकिया नाम के बाद आप 13 अंक और उसके पीछे B2 लिखा हुआ देखेंगे। 13 संख्या आपको मानचित्र संख्या 13 की ओर संकेत करती है जबकि B2 बताता है कि अन्तकिया मानचित्र में कहाँ बना है।



दूँदें >> रंगीन मानचित्र सूची के पश्चात कुछ ही पृष्ठ पलटने पर मानचित्र संख्या 13 को देखें।



इस मानचित्र में आप ऊपरी स्थान पर अंकों तथा अक्षरों को चित्र के अलंगों पर लिखा हुआ पाएंगे। सबसे पहले 13 मानचित्र में संख्या 3 को दूँदें। और जब अलंग पर लिखे हुए अक्षर B को देखें। मानचित्र में वह स्थान जहाँ पर B और 3 आकर आपस में मिलते हैं वही स्थान अन्ताकिया है।



ढूँढें >> निम्नलिखित चित्र में दर्शाये रेखांकन पर ध्यान दें। अपनी बाइबल के पिछले हिस्से में मानचित्र 13, जो प्रेरितों की प्रथम यात्रा है ढूँढें।



चित्र ढूँढने के पश्चात निम्नलिखित तीन बातों को लिखें:

- प्रान्त (जैसे सीरिया) बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं जबकि शहरों (जैसे अन्ताकिया) छोटे शब्दों में लिखे गये हैं।
- मानचित्र की अलंग पर आप अनेकों रंगों में खिंची रेखाएं देखेंगे। प्रत्येक रेखा की व्याख्या की गयी है।
- समुद्र तथा झील को हमेशा नीले रंग से दर्शाया गया है।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देने के लिए प्रेरितों की पहली यात्रा के चित्र का इस्तेमाल करें।

प्र 4 रोमन साम्राज्य के मध्य में कौन सा महासागर बसा है ?

प्र 5 मानचित्र में बनी हरी रेखाओं का क्या अभिप्राय है ?

प्र 6 मानचित्र में बनी नीली रेखाओं का क्या अभिप्राय है ?

9

शब्दानुक्रमणिका तथा अन्य औज़ार

अन्त में हम उन अतिरिक्त सहायक अध्ययन के औज़ारों के बारे में बताना चाहते हैं जो आपकी बाइबल के पिछले हिस्से में अंकित हैं। जिनमें निम्न बातें शामिल हैं:

- **भार और तौल की तालिका, पेज 1383**, आपकी बाइबल के समय में भार व तौल के मापदण्डों से वर्तमान भार तौल के अनुसार वजन या नाप जानने में सहायता कर सकता है।

भार और तौल की तालिका		
बाइबल के अनुसार/यूनिट	अमरीकी उपरोक्त (अनुमानत):	मीटरी (अनुमानत):
लेइ, किलोग्राम	75 पाउण्ड	34 किलोग्राम
सेना	1 1/4 पाउण्ड	0.6 किलोग्राम

- एक विषय सूची, पृष्ठ 1385, पर अंकित है, आपकी यह ढूँढ़ने में सहायता करता है कि स्टडी नोट्स तथा लेखों द्वारा उस विषय पर कहाँ चर्चा की गयी है।

विषय सूची

यह विषय सूची आगरे विभिन्न विषयों को निर्धारित करने में सहायक होगा जो अध्ययन दिग्विी और लेखों में बताया गया है। पृष्ठ संख्या को सुस्पष्ट दर्शाया गया है।

<p>अग्ने, कालीघाटा वर्ष निर्देशक और पत्रकार भी निर्देशक 2:8 पत्रकार 22-25-28 संपादन 12-28 विशेष उपदेश</p>	<p>पृ 1:21 अज्ञातकीय भाग का पत्र : पृ 20-22; 1 पत्र 5:2 पत्र 13:17 संपादन : पृ 8:6, 14:23; 20:28; 1 पत्र 9:22 पत्र लेख अज्ञातकीय और विचार-संग्रह - 1272 1 पत्र 3:2-4,7; 8:12</p>	<p>1 पत्र 4:6,8 अज्ञात पत्र 18:11; 20:31 1 पत्र 21:17 पत्र 5:1 पत्र 7:17; 94:9-23</p>
--	---	---

- प्रसंग खोजी अनुक्रमणिका, पृष्ठ 1399, आपको 12 विषयों के तहत आने वाले अनेकों अनुच्छेदों की ओर मार्गदर्शन करेगी। इस विषय पर हमने अध्याय सात में चर्चा की थी।

प्रसंग खोजी अनुक्रमणिका

यह प्रसंग खोजी अनुक्रमणिका विनोक्तस्य परमार्थ में वस्तु एवं परिच्छेद के विशिष्ट मुख्य प्रसंग को संकलित करने में सहायक है। प्रसंग खोजी अनुक्रमणिका स्वतंत्रिक बहसाल विषय पर अलग-अलग है।

 <p>व्यक्तिगत व / परिवाराला के घर जाय निर्देशक 31:1-6 निर्देशक 27:18</p>	 <p>परिवाराला का साधन निर्देशक 20:30-35 निर्देशक 11:24-28</p>	 <p>परिवाराला का फल उपदेश 50:19-21 निर्देशक 6:24-28</p>
--	---	---

- एक वर्ष में सम्पूर्ण बाइबल, पृष्ठ 1403, यह एक बाइबल पठन योजना है जिससे आप वर्ष भर में सम्पूर्ण बाइबल पढ़ सकें।

एक वर्ष में सम्पूर्ण बाइबल

यहाँ दी गई पढ़ने की विधि से एक वर्ष में सम्पूर्ण बाइबल को पढ़ा जा सकता है। इतिथि से पता है, एक पुराने नियम से और दूसरा नये नियम से। यदि आप इनमें अधिक अध्ययन से अब जाते हैं तो एक वर्ष की बहसाल से वर्ष में सम्पूर्ण बाइबल को पढ़ सकते हैं। यहाँ वर्ष पुराने नियम को पढ़ें और दूसरे वर्ष नये नियम को पढ़ें।

वर्षवरी	पुस्तक	पत्र	वर्षवरी	पुस्तक	पत्र
1	मत् 1-2	पत्र 1	1	पत्र 22-23	पत्र 22:15-48
2	मत् 3-5	पत्र 2	2	पत्र 24-25	पत्र 23
3	मत् 6-8	पत्र 3	3	पत्र 26-27	पत्र 24:5-36
4	मत् 9-11	पत्र 4	4	पत्र 28	पत्र 24:36-51
5	मत् 12-14	पत्र 5:1-28	5	पत्र 29-30	पत्र 25:5-30
6	मत् 15-17	पत्र 5:21-48	6	पत्र 31	पत्र 25:31-48
7	मत् 18-19	पत्र 6:1-18	7	पत्र 32-33	पत्र 26:5-30
8	मत् 20-22	पत्र 6:19-7:6	8	पत्र 34-35	पत्र 26:31-68
9	मत् 23-24	पत्र 7:7-28	9	पत्र 36-37	पत्र 26:67-75
10	मत् 25-26	पत्र 8:1-27	10	पत्र 38-39	पत्र 27:1-26

प्र 4 अनुपस्थित शब्द बाइबल में कहाँ लिखा है ? उस आयत को लिखें जहाँ यह शब्द पाया जाता है ।

सहायक निर्देश: जब आप किसी आयत के कुछ शब्दों को जानते हैं और आप उस आयत को ढूँढना चाहते हैं तो आप उस आयत के सबसे कम सामान्य शब्द को शब्दानुक्रमणिका में ढूँढ़ें। उदाहरण के लिए, मान लीजिये कि आप आयत 'यीशु रोया' को ढूँढना चाहते हैं। अपनी शब्दानुक्रमणिका में 'रोया' शब्द को ढूँढ़ें क्योंकि यह शब्द 'यीशु' से बहुत कम परिचित या सामान्य शब्द है। सैकड़ों ऐसी आयतें हैं जिनमें यीशु शब्द का इस्तेमाल किया गया है। परन्तु कुछ ही ऐसी आयतें हैं जिनमें 'रोया' शब्द का इस्तेमाल किया गया है।

उत्तरमाला

अध्याय 1

- प्र1 मानवीय इतिहास का प्रारम्भ
- प्र2 1:1-11:26
- प्र3 यूसुफ का सारांश
- प्र4 50:15-26
- प्र5 मूसा
- प्र6 आरम्भ
- प्र7 1445-1405 ई.पू.
- प्र8 मूल, स्रोत, सृष्टि या किसी बात की शुरुआत
- प्र9 जगत की उत्पत्ति, मनुष्यजाति, विवाह, पाप, शहर, भाषाएं, देश, इस्त्राएल तथा छुटकारे का इतिहास
- प्र10 दो
- प्र11 पाँच
- प्र12 सृष्टि, पतन, केन व हाबिल, भयंकर बाढ़ या बाबेल की मिनार
- प्र13 अब्राहम, इसहाक, याकूब, यूसुफ
- प्र14 सात
- प्र15 (उत्तर के लिए बाइबल के 3 पेज को देखें)
- प्र16 स्त्री का बीज, शेत का वंश, शेम का वंश, तथा अब्राहम के वंशज
- प्र17 (चुनाव के लिए इब्रानियों 11:1-22 को देखें)

अध्याय 2

- प्र1 प्रारम्भ
- प्र2 उत्पत्ति 1:1
- प्र3 आदम और हव्वा
- प्र4 उत्पत्ति 2:4

अध्याय 3

- प्र1 उदाहरण के लिए “प्रारम्भ”, “धरती” और “स्वर्ग”
- प्र2 (बाइबल इस्तेमाल करने पर फर्क जवाब होंगे)
- प्र3 (विद्यार्थियों की पसन्द)
- प्र4 (बाइबल इस्तेमाल करने पर फर्क जवाब होंगे)
- प्र5 तीन
- प्र6 (विद्यार्थियों की पसन्द)
- प्र7 विद्यार्थियों का अपना विवरण
- प्र8 बना
- प्र9 सब जन्तुओं और सारी धरती पर
- प्र10 सारे जंगली जानवरों पर
- प्र11 रुत 4:18-22
- प्र12 दाऊद और मसीह के पुरखा, जिनमें रुत और बोआज भी शामिल हैं
- प्र13 विश्वासयोग्यता, भरोसेमन्दी तथा वफादारी की महत्वता

अध्याय 4

- प्र1 योम
- प्र2 पृथ्वी के ऊपर जल तथा उसके ऊपर बादलों के बीच का वातावरण
- प्र3 मछलियाँ व पक्षी
- प्र4 जानवर व मनुष्य

अध्याय 5

- प्र1 सृष्टि का परमेश्वर
सृष्टि की रचना करते समय परमेश्वर के कार्य
सृष्टि में परमेश्वर का उद्देश्य व लक्ष्य
सृष्टि तथा विकास
- प्र2 “यद्यपि यह सीमित था परन्तु फिर भी वह परमेश्वर को व्यक्तिगत तथा प्रेमपूर्वक प्रतिउत्तर दे सके।”

अध्याय 6

- प्र1 शैतान और दुष्टात्माओं पर विजय
- प्र2 एक
- प्र3 निर्गमन 7:10-12

अध्याय 7

- प्र1 निर्गमन 35:30-35 व 1 पतरस 4:10-11
- प्र2 चार बार
- प्र3 उन्चालीस नामदर्जीयां
- प्र4 प्रकाशित वाक्य 1:7, 16:15, 19:11-16, 22:12, 22:20
- प्र5 “मत्तूशेलह के जन्म के पश्चात हनोक तीन सौ वर्ष तक परमेश्वर के साथ चलता रहा, और उसके और भी बेटे-बेटियाँ उत्पन्न हुईं।” उत्पत्ति 5:22

अध्याय 8


- प्र1 एलाम, अश्शूर, अर्पक्षद, लूद, अराम
- प्र2 लगभग 250 मील
- प्र3 तिगरिस व फरात नदी
- प्र4 महासागर
- प्र5 पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा
- प्र6 पौलुस की रोम यात्रा

अध्याय 9

- प्र1 हारुन
- प्र2 यहो. 21:4, निर्गमन 4:4-16, व्यव. 9:20
- प्र3 उत्पत्ति 11:26-27
- प्र4 यद्यपि मैं शरीर के भाव से तुम से दूर हूँ, तौभी आत्मिक भाव से तुम्हारे निकट हूँ, और तुम्हारे व्यवस्थित जीवन को और तुम्हारे विश्वास की जो मसीह में है, दृढ़ता देखकर प्रसन्न होता हूँ। कुलुस्सियों 2:5

बधाई हो!! आपने 'किस तरह *अग्निमय बाइबल* का इस्तेमाल किया जाये' पुस्तक को सफलतापूर्वक समाप्त कर लिया है। इस उपलब्धि को सम्मानित करने के लिए हमने एक प्रमाण पत्र का प्रयोजन किया है। हम आशा करते हैं कि जब आप यीशु मसीह के लिए सेवा करते हैं तो इस पुस्तक में प्राप्त जानकारियाँ आपके लिए मददगार होंगी।

समापन प्रमाण-पत्र



प्रमाणित किया जाता है कि _____
(नाम)

ने सफलतापूर्वक इस कार्यक्रम को सम्पन्न किया

***अग्निमय बाइबल* का अनुभव करना:
एक तत्काल अध्ययन पुस्तिका**

दिन _____ दिनांक _____ 200__